Fortnightly per copy Rs. 4/- only ओ३म् 03rd January 2019

आर्य జీవన్ जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హింది - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आर्यप्रचारक, प्रखरवक्ता,प्रसिद्ध संसद कर्मवीर पंडित प्रकाशवीर शास्त्री

आर्य समाज के जो प्रमुख वक्ता, हुए, कुशल राजनेता हुए उनमें पं. प्रकाश वीर शास्त्री जी का नाम प्रमुख रुप से लिया जाता है । आप का नाम प्रकाशचन्द्र रखा गया । आप का जन्म गांव रहरा जिला मुरादाबाद , उतर प्रदेश में हुआ । आप के पिता का नाम श्री दिलीप सिंह त्यागी था , जो आर्य विचारों के थे । उस काल का प्रत्येक आर्य परिवार अपनी सन्तान को गुरुकुल की शिक्षा देना चाहता था । इस कारण आप का प्रवेश भी पिता जी ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में किया । इस गुरुकुल में एक अन्य विद्यार्थी भी आप ही के नाम का होने से आप का नाम बदल कर प्रकाशवीर कर दिया गया । इस गुरुकुल में अपने पुरुषार्थ से आपने विद्याभास्कर तथा शास्त्री की परीक्षाएं उतीर्ण कीं । तत्पश्चात आप ने संस्कृत विषय में आगरा विश्व विद्यालय से एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की । पण्डित जी स्वामी दयानन्द जी तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों में पूरी आस्था रखते थे । इस कारण ही आर्य समाज की अस्मिता को बनाए रखने के लिए आपने १९३९ में मात्र १६ वर्ष की आयु में ही हैदराबाद के धर्म युद्ध में भाग लेते हुए सत्याग्रह किया तथा जेल गये । आप की आर्य समाज के प्रति अगाध आस्था थी, इस कारण आप अपनी शिक्षा पूर्ण करने पर आर्य प्रतिनिधि सभा उतर प्रदेश के माध्यम से उपदेशक स्वरुप कार्य करने लगे । आप इतना ओजस्वी व्याख्यान देते थे कि कुछ ही समय में आप का

-: जयंती :-
जन्म : ३०-१२-२०१८ निधन : २३-११-१९७७

नाम देश के दूरस्थ भागों में चला गया तथा सब स्थानोण से आपके व्याख्तान के लिए आप की मांग देश के विभिन्न भागों से होने लगी । पंजाब में सरदार प्रताप सिंह कैरो के नेत्रत्व में कार्य कर रही कांग्रेस सरकार ने हिन्दी का विनाश करने की योजना बनाई । आर्य समाज ने पूरा यत्न हिन्दी को बचाने का किया किन्तु जब कुछ बात न बनी तो यहां हिन्दी रक्षा समिति ने सत्याग्रह आन्दोलन करने का निर्णय लिया तथा शीघ्र ही सत्याग्रह का शंखनाद १९५८ इस्वी में हो गया । आप ने भी इस समय अपनी आर्य समाज के प्रति निष्टा व कर्तव्य दिखाते हुए सत्याग्रह में भाग लिया । इस आन्दोलन ने आप को आर्य समाज का सर्व मान्य नेता बना दिया । इस समय आर्य समाज के उपदेशकों की स्थिति कुछ अच्छी

न थी । इनकी स्थिति को सुधारने के लिए आप ने अखिल भारतीय आर्य उपदेशक सम्मेलन स्थापित किया तथा लखनउ तथा हैदराबाद में इस के दो सम्मेलन भी आयोजित किये । इससे स्पष्ट होता है कि आप अर्योपदेशकों कितने हितैषी थे । आप की कीर्ति ने इतना परिवर्तन लिया कि १६५८ इस्वी को आप को लोक सभा का सदस्य चुन लिया गया । इस प्रकार अब आप न केवल आर्य नेता ही बल्कि देश के नेता बन कर राजनीति में उभरे । १६६२ तथा फ़िर १६६७ में फ़िर दो बार आप स्वतन्त्र प्रत्याशी के रूप में लोक सभा के लिए चुने गए । एक सांसद के रूप में आप ने आर्य समाज के बहुत से कार्य निकलवाये । १६७५ में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, जो नागपुर में सम्पन्न हुआ, में भी आप ने खूब कार्य किया तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मंगलवारी नागपुर के सभागार में, सम्मेलन मे पधारे आर्यों की एक सभा का आयोजन भी किया । इस सभा में (हिन्दी सम्मेलन में पंजाब के प्रतिनिधि स्वरुप भाग लेने के कारण) मैं भी उपस्थित था, आप के भाव प्रवाह व्याख्यान से जनजन भाव विभोर हो गया । आप ने अनेक देशों में भ्रमण किया तथा जहां भी गए, वहां आर्य समाज का सन्देश साथ लेकर गये तथा सर्वत्र आर्य समज के गौरव को बटाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहे । जिस आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपदेशक बनकर आपने कार्य क्शेत्र में कदम बटाया था , उस आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आप अनेक वर्ष तक प्रधान रहे । आप के ही पुरुषार्थ से मेरट, कानपुर तथा वाराणसी में आर्य समाज स्थापना शताब्दी सम्बन्धी सम्मेलनों को सफ़लता मिली । इतना ही नहीं आप की योग्यता के कारण सन १६७४ इस्वी में आप को आप का जीवन यात्राओं में ही बीता तथा अन्त समय तक यात्राएं ही करते रहे । अन्त में जयपुर से दिल्ली की ओर आते हुए एक रेल दुघटना हुई । इस रेल गाडी में आप भी यात्रा कर रहे थे । इस दुर्घटना के कारण २३ नवम्बर १६७७ इस्वी को आप की जीवन यात्रा भी पूर्ण हो गई तथा आर्य समाज का यह महान योद्धा हमें सदा के लिए छोड कर चला गया।

—डा. अशोक आर्य

खुदी पर विश्वास नहीं, ईश से क्या आस

-नरेन्द्र आहूजा विवेक

ऐसी कमाई मत करो, जो पीछे रह जाय ।
नेकी जीवन में करो, काम सदा जो आय।।

मंजिल को तू पा सके, हो खुद पर विश्वास।
खुदी पर विश्वास नहीं ईश से क्या आस।।

यह तो ताकत वक्त की, बने नूर वेनूर ।
कीमत जाने वक्त की, फकीर बने हजूर।।

निंदा से डर कर कभी, राह छोड़ ना जाय।
मंजिल मिलते ही सदा, बदले सबकी राय।।

छीन निवाला और को, खाता समझे शान।
पेट कभी ना भर सके, झूठा है अभियान।।

खाता जो भी बाँट कर, वह तो पुण्य कमाय।
यज्ञ आहूति दे रहा, जीवन यज्ञ बनाय ।।

जतन अगर हम कुछ करें, गाँठें सब खुल पाय।
केंची गर चलाई तो, उम्मीदें कट जाय ।।

गलती अपनी जानकर, साहस से स्वीकार।
देता पश्चाताप ही, माफी का अधिकार ।।

अच्छी बातें तो सदा, जल्द समझ ना आय।
बुरे परिणाम ही तुझे, सत्य सदा समझाय।।

धैर्य जो भी रख सके, कभी नहीं गिर पाय।
सबकी नजरों में सदा, अपनी जगह बनाय।।

करम में स्वतंत्र तू, इच्छा से कर पाय ।
करम बना कर लेखनी, भाग्य खुद लिख जाय।।

रचना से ही देख लो, कैसा रचनाकार ।
उसके जैसा कौन है, करता पर उपकार ।।

आदि कवि की कविता को, पढ़े जान जो जाय।
उसकी वनी रचना में, देख उसी को पाय ।।

उसके जैसा है नहीं, मेरा कोई यार ।
साथ सदा मेरे रहे, करता है उपकार ।।

धन निधन तक माँग रहा, साथ नहीं जो जाय ।
पूंजी नेकी की कमा, तेरा साथ निभाय ।।

सत्यार्थ प्रकाश के १३वें समुल्लास में से चुने हुए अनमोल वचन

-भावेश मेरजा

सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जग प्रसिद्ध ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ मूलतः हिन्दी में लिखा गया है। इस ग्रन्थ के पूर्वार्ध में १० समुल्लास अर्थात् अध्याय हैं। पूर्वार्ध में वैदिक धर्म सम्बन्धित अनेक विषयों का प्रतिपादन किया गया है। उत्तरार्ध में चार समुल्लास हैं। उत्तरार्ध के इन समुल्लासों में आर्यावर्त्तीय मत-सम्प्रदायों, चार्वाक-बौद्ध-जैन मतों, ईसाई तथा मुसलमानों के मत की क्रमशः उनके मान्य प्रमुख ग्रन्थों के आधार पर समालोचना की गई है। गन्थ की मुख्य भूमिका, उत्तरार्ध के चारों समुल्लासों की अनुभूमिकाओं तथा ग्रन्थ के अन्त में लिखे गए स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश प्रकरण में महर्षि ने इस ग्रन्थ का प्रयोजन सत्यान्वेषण के द्वारा ऐक्य निर्माण कर मानव जाति की उन्नति करना है यह भली-भाँति दर्शाया है। इन मत-मज़हबों की समीक्षा प्रस्तुत करने से पूर्व ग्रन्थ के पूर्वार्थ के अन्त में महर्षि ने अपने पाठक वृन्द से यह आशा व्यक्त की है कि इस ग्रन्थ के उत्तरार्ध में की गई समालोचनाओं को न्याय दृष्टि से देखेंगे और इनमें किए गए स्थूल तथा सूक्ष्म खण्डनों के अभिप्राय को ठीक से समझेंगे। ग्रन्थ का १३वाँ समुल्लास ईसाइयों के मत के विषय में है जिसमें बाइबिल की अनेक आयतों को उद्धृत कर उन पर महर्षि ने अपनी 'समीक्षा' प्रकाशित की है। उत्तरार्ध के ये चारों समुल्लास मुख्यतः खण्डन-मण्डन परक होने से देखा गया है कि कई वार कुछ पाठक इन समुल्लासों में विद्यमान कई अति महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक बातों एवं सच्चाइयों की ओर सम्यक् ध्यान नहीं दे पाते हैं। प्रस्तुत लेख में १३वें समुल्लास से संकलित की गई ऐसी कुछ चुनी हुई सच्चाइयाँ तथा सिद्धान्त वाक्य पाठकों के स्वाध्याय तथा चिन्तन हेतु प्रस्तुत किए जाते हैं।

१) जो वेद मार्ग का स्वीकार करेगा उसके न्याय होने में कुछ भी देर न होगी।

२) आकाश साकार पदार्थ नहीं है जिसको कोई लपेटे व इकट्ठा कर सके।

३) क्या परमेश्वर का भी कोई मन्दिर हो सकता है ? जो वेदोक्त परमात्मा सर्वव्यापक है उसका कोई भी मन्दिर नहीं हो सकता।

४) न्याय उसी को कहते है कि जिसने जैसा व जितना कर्म किया उसको वैसा और उतना ही फल देना। उससे अधिक या न्यून देना अन्याय है।

५) जो अन्यायकारी की उपासना करते हैं वे अन्यायकारी क्यों न हों।

६) संयोगजन्य पदार्थ को वियोग अवश्य होता है।

७) जब अकेला पापी स्वर्ग को प्राप्त नहीं हो सकता तो जो अनेक पापियों के पाप के भार से युक्त है वह क्यों स्वर्गवासी हो सकता है ?

८) झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता।

९) झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता।

१०) वचन के विना भी चुपचाप रह कर कर्ता सृष्टि कर सकता है।

११) ईश्वर किसी की सिफारिश नहीं सुनता।

१२) ईश्वर का न कोई पुत्र, न वह किसी का बाप है, क्योंकि वह किसी का बाप है, क्योंकि वह किसी का बाप हो तो किसी का श्वसुर, श्याला सम्बन्धी आदि भी हो।

१३) कोई कितनी भी चतुराई करे परन्तु अन्त में सच-सच और झूठ-झूठ हो जाता है।

१४) यह कितना बड़ा अन्याय है, जो नरक में जायेगा सो अनन्त काल तक नरक भोगे और जो स्वर्ग में जायेगा वह सदा स्वर्ग भोगेगा। यह भी बड़ा अन्याय है, क्योंकि अन्त वाले साधन और कर्मों का फल भी अन्त वाला होना चाहिये और तुल्य पाप व पुण्य दो जीवों का भी नहीं हो सकता। इसीलिये तारतम्य से अधिक न्यून सुख-दुःख वाले अनेक स्वर्ग और नरक हों तभी सुख-दुःख भोग सकते हैं।

१५) अपने मुख से अपनी बढ़ाई करना अच्छे मनुष्यों का काम नहीं।

१६) जो कोई अच्छा काम करे वह अच्छा और बुरा काम करे वह बुरा फल पाता है।

१७) जितनी सामग्री धनाढ्यों के पास होतीं हैं उतनी दरिद्रों के पास नहीं। यदि धनाढ्य उत्तम गति को प्राप्त हो सकते हैं।

१८) जो अविश्वासी, अपवित्रात्मा, अधर्मी मनुष्यों का लेख होता है उस पर विश्वास करना कल्याण की इच्छा करने वाले मनुष्य का काम नहीं।

१९) सब कर्मों के फल यथायोग्य देने से ही न्याय और पूरी दया होती है।

२०) जो पाप क्षमा करने की बात है वह केवल भोले लोगों को प्रलोभन देकर फंसाना है।

२१) जैसे दूसरे के पिये मद्य, भाँग, अफीम खाये का नशा दूसरे को नहीं प्राप्त हो सकता वैसे ही किसी का किया हुआ पाप किसी के पास नहीं जाता किन्तु जो सकता है वही भोगता है, यही ईश्वर का न्याय है।

२२) यदि दूसरे का किया पाप-पुण्य दूसरे को प्राप्त हो अथवा न्यायाधीश स्वयं ले ले व कर्ताओं को ही यथायोग्य फल ईश्वर न दे तो वह अन्यायकारी हो जाये।

२३) धर्म ही कल्याणकारक है।

२४) भूतों का आना व निकालना, बिना औषधि व पथ्य के व्याधियों का छूटना सृष्टिक्रम से असम्भव है।

२५) घर के लोगों के शत्रु घर के लोगों को बनाना, यह श्रेष्ठ पुरुष का काम नहीं।

२६) जो परमेश्वरका नियम है उसको कोई तोड़ सकता है ?

२७) जो परमेश्वर भी नियम को उलटा पलटा करे तो उसकी आज्ञा को कोई न माने और वह भी सर्वज्ञ और निर्भ्रम न रहे।

२८) ईश्वर भी पूर्वकृत नियम को उलटा नहीं कर सकता क्योंकि वह सर्वज्ञ और उसके सब काम बिना भूल-चूक के हैं।

२९) जैसे वड़ी-वड़ी और बहुत मच्छियों को जाल में फँसाने वाले की प्रतिष्ठा और जीविका अच्छी होती है, ऐसे ही जो बहुतों को अपने मत में फँसा ले उसकी अधिक प्रतिष्ठा और जीविका होती है। इसी से ये लोग जिन्होंने वेद और शास्त्रों को न पढ़ा, न सुना उन विचारे भोले मनुष्यों को अपने जाल में फँसा के उसके माँ-वाप, कुटुम्व आदि से पृथक् कर देते हैं। इससे सभी विद्वान् आर्यों को उचित है कि स्वयम् इनके भ्रमजाल से बच कर अन्य अपने भोले भाइयों को बचाने में तत्पर रहें।

३०) जो यह किसी कवि ने लिखा है सत्य है कि - **'क्षमे रुष्टः क्षणे तुष्टो रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे । अव्यवस्थितचित्तस्य प्रशा दोऽपि भयंकरः ।।'** -जैसे कोई मनुष्य क्षण में प्रसन्न, क्षण में अप्रसन्न होता है, अर्थात् क्षण-क्षण में प्रसन्न-अप्रसन्न हो उसकी प्रसन्नता भी भयदायक होती है।

३१) ईश्वर के लिए मनुष्य और पशु-पक्षी आदि सभी जीव पुत्रवत् हैं।

३२) बिना अपराध किसी को दण्ड देना अन्यायकारी वात है।

३३) नियोग की बातें सब देशों में चलती थीं।

३४) मुर्दों के गाड़ने से संसार को बड़ी हानि होती है क्योंकि वह सड़ कर वायु को दुर्गन्धमय वनाता है और रोग फैलाता है।

३५) सबसे बुरा (मृतक को) गाड़ना है, उससे कुछ थोड़ा बुरा जल में डालना, क्योंकि उसको जलजन्तु उसी समय चीर-फाड़ कर खा लेते है परन्तु जो कुछ हाड़ व मल, जल में रहेगा तो वह सड़कर जगत् के लिए दुःख दायक होगा। उससे कुछ थोड़ा बुरा जंगल में छोड़ना है क्योंकि उसको मांसाहारी पशु-पक्षी लुंचा खायेंगे तथापि जो उसके हाड़, हाड़ की मज्जा और मल सड़ कर जितना दुर्गन्ध करेगा उतना जगत् का अनुपकार होगा, और जा जलाना है वह सर्वोत्तम है क्योंकि उसके सब पदार्थ अणु होकर वायु में उड़ जाएँगे।

३६) जो अविधि से (मृतक को) जलाएँ तो थोड़ा-सा (दुर्गन्ध) होता है, परन्तु गाड़ने आदि से बेहतर है और जो विधिपूर्वक जैसा कि वेद में लिखा है, उस प्रकार से दाह करें तो कुछ भी दुर्गन्ध न हो, किन्तु इसी का नाम अन्त्येष्टि, नरमेध, पुरुषमेध यज्ञ है। जो दरिद्र हो तो भी बीस सेर से कम घी चिता में न डालें, चाहे वह भीख माँगने व जाति वाले के देने अथवा राज से मिलने से प्राप्त हो, परन्तु उसी प्रकार दाह करें।

३७) जो घृतादि किसी प्रकार न मिल सके तथापि गाड़ने आदि से या केवल लकड़ी से भी मृतक को जलाना उत्तम है क्योंकि एक विश्वा भर भूमि में अथवा एक वेदी में लाखो-करोड़ो मृतक है क्योंकि एक विश्वा भर भूमि में अथवा एक वेदी में लाखों-करोड़ो मृतक जल सकते हैं। भूमि भी गाड़ने से बिगड़ती है और कबर देखने से भय भी होता है। इसलिए गाड़ना आदि सर्वथा निषिद्ध है।

३८) जो यह खतनः करना ईश्वर को इष्ट होता तो उस चमड़े को आदि सृष्टि में बनाता ही नहीं और जो यह बनाया गया है वह रक्षार्थ है, जैसे आँख के ऊपर का चमड़ा। क्योंकि वह गुप्त स्थान अति कोमल है। जो उस पर चमड़ा न हो तो एक कीड़ी (चींटी) के भी काटने और थोड़ी-सी चोट लगने से बहुत दुःख हो और यह लघुशंका के पश्चात् कुछ मूत्रांश कपड़ों में न लगे इत्यादि बातों के लिये है। इसे काटना बुरा है।

३९) सज्जन लोगों को मद्य पीने का नाम भी न लेना चाहिए।

४०) वेदोक्त परमेश्वर सब पाप, क्लेश, दुःख, शोकादि से रहित 'सच्चिदानन्दस्वरूप' है।

४१) जब सारी पृथ्वी पर एक भाषा और परस्पर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ होगा।

४२) ईश्वर के तुल्य कभी कोई नहीं हो सकता।

४३) गुण से द्रव्य कभी नहीं बन सकता, जैसे रूप से अग्नि ऐर रस से जल नहीं बन सकता।

४४) जो ईश्वर से जगत् बना होता तो ईश्वर के सदृश गुण, कर्म, स्वभाव वाला होता। उसके गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश न होने से यही निश्चय है कि ईश्वर से (जगत) नहीं बना किन्तु जगत् के (उपादान) कारण अर्थात् परमाणु आदि नाम वाले जड़ से बना है।

४५) जो आप झूठा और दूसरे को झूठ में चलावे उसको शैतान कहना चाहिए।

४६) विना अवकाश के कोई भी पदार्थ स्थित नहीं हो सकता।

४७) जो (ईश्वर) विभु (सर्वव्यापक) नहीं है तो वह जगत् की रचना, धारण, पालन और जीवों के कर्मों की व्यवस्था व प्रलय कभी नहीं कर सकता, क्योंकि जिस पदार्थ का स्वरूप एकदेशी है उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी एकदेशी होते हैं, जो ऐसा है तो वह ईश्वर नहीं हो सकता। क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव युक्त, सच्चिदानन्दस्वरूप, नित्य, शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वभाव, अनादि, अनन्तादि लक्षणयुक्त वेदों में कहा है। उसी को मानो सभी तुम्हारा कल्याण होगा, अन्यथा नहीं।

४८) सब मनुष्यों के लिए उचित है कि सब के मत विषयक पुस्तकों को देख-समझ कर कुछ सम्मति व असम्मति दें व लिखें, नही तो सुना करें। क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है वैसे सुनने से बहुश्रुत होता है। यदि श्रोता दूसरे को नहीं समझा सके तथापि आप स्वयं तो समझ ही जाता है।

४९) जो कोई पक्षपातरूप या न रूढ हो कर देखते हैं उनको न अपने और न पराये गुण-दोष विदित हो सकते है।

५०) मनुष्य की आत्मा यथायोग्य सत्याऽसत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखती है। जितना अपना पठित व श्रुत है उतना निश्चय कर सकता है।

५१) यदि एक मत वाले दूसरे मतवाले के विषयों को जाने और अन्य न जाने तो यथावत् संवाद नहीं हो सकता, किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाड़े में गिर जाते हैं।

५२) जो सर्वमान्य सत्य विषय है वे तो सब (मतों) में एक से हैं। झगड़ा झूठे विषयों में होता है। अथवा एक सच्चा और दूसरा झूठा हो तो भी कुछ थोड़ा सा विवाद चलता है।

५३) यदि वादी-प्रतिवादी सत्याऽसत्य निश्चय के लिये वाद-प्रतिवाद करें तो अवश्य निश्चय हो जाये।

कहाँ जा रहे हैं आप

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

अचानक मुझे पीछे से एक आवाज़ सुनाई पड़ी। मैंने मुड़ कर पीछे देखा तो सर्व कर्म नियन्ता समाचार्य (जिन्हें लोग डरकर यमराज भी कहते हैं।) मुझे मुस्कराते हुए दृष्टिगत हुए। मुझे ऐसा लगा कि हमारा जन्म-जन्मान्तर का साथ है। मैंने व उन्होंने एक-दूसरे को प्रणाम किया और कहा,

''महाराज, जाना कहाँ, जीवन के सत्तर वसन्त पूरे हो गये। अव जीर्ण-शीर्ण शरीर को छोड़ कर सूक्ष्म शरीर से अन्तरिक्ष में विचरण कर रहा हूँ। सौभाग्य से आपके दर्शन हो गए यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है।''

''यह तुम्हारा सौभाग्य है या दुर्भाग्य, यह तो बाद में तुम्हें पता चल ही जाएगा, फिलहाल इतना बता दो कि तुम कहाँ से आ रहे हो ?'' यमाचार्य ने दूसरा प्रश्न दाग दिया।

''जी, मैं पृथ्वी लोक के वानपरस्थ आश्रम से आ रहा हूँ।''

''तुम आश्रम में करते क्या थे ?''

''मैं आश्रम में रहता था और साधना करता था।''

''तुम आश्रम में रहते थे या साधना करते थे ?''

''मैं आश्रम में रहता था और साधना भी करता था।'' मैंने उत्तर दिया।

''रहना और बात है और साधना करना दूसरी बात है। रहने के लिए तो तुम घर में भी रह सकते थे जहाँ तुम्हें सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हो सकती थीं। अतः केवल रहने के लिए तुम आश्रम नहीं आए। जहाँ तक साधना का प्रश्न है, यदि तुम साधक हो तो उसका प्रतिफल भी दृष्टिगत होना चाहिए, तुम्हारे चेहरे पर आध्यात्मिक शान्ति होनी चाहिए।'' यमाचार्य ने मेरी बात को उलट-पुलट कर दिया।

''तो फिर आप ही बता दीजिए कि मैं आश्रम में क्या करता था ?'' मैंने उद्विग्न होकर कहा।

''प्रश्न आपके जीवन से सम्बन्धित है, समाधान भी तुम्हें खुद ढूँढ़ना चाहिए। अच्छा सब यह बताओ कि तुम्हें अब जाना कहाँ है ?''

''मुझे कुछ नहीं पता कि कहाँ जाना है ??

''तो सुनो, मै बताता हूँ। यहाँ एक तिराहा है-एक रास्ता स्वर्ग लोक ले जाता है, दूसरा नरक के द्वार तक जाता है तो तीसरा मनुष्य लोक तक जाकर ठहर जाता है। बोलो कहाँ जाओगे ?''

''मैं स्वर्ग लोक जाना चाहता हूँ।'' मैंने झिझकते हुए कहा।

''क्या तुम्हें स्वर्गलोक की जानकारी है ?''

''नहीं, बिल्कुल नहीं।'' मैंने भोलेपन से कहा।

''कैसे विचित्र प्राणी हो, जाना चाहते हो स्वर्ग, पर वहाँ की कोई जानकारी नहीं। अरे भाई, मनुष्य लोक में भी यदि मनुष्य किसी शहर में जाता है तो उसकी थोड़ी बहुत जानकारी तो रखता है पर तुम तो पहली बार सूक्ष्म शरीर से विशाल स्वर्ग लोक जा रहे हो, पर तुम्हें वहाँ की रतीभर भी जानकारी नहीं। क्या सवर्ग में कोई तुम्हारा जानकार है ?''

''नहीं महाराज, कोई नहीं।'' मैंने रूआँसे स्वर में कहा।

''क्या तुम पढ़े-लिखे हो ?''

''थोड़ा-थोड़ा।''

''संस्कृत का ज्ञान है ?''

''बिल्कुल नहीं।''

''तो सुनो, जिस लोक में तुम जाना चाहते हो उस लोक के मनुष्यों की तुम्हें पहचान बता रहा हूँ-

स्वर्ग स्थितानामिह जीवलोके चत्वारि
चिह्नानि भवन्ति देहे।
दान प्रसंगो मधुरा च वाण, देवार्यनं
ब्राह्मण तर्पणं वा॥

अर्थात् स्वर्ग में रहने वाले प्राणियों के चार चिह्न होते हैं। वे दानशील होते हैं, उनकी वाणी में माधुर्म होता है, वे ईश्वर भक्त और विद्वानों के सेवक होते हैं। अव बताओ, यदि तुम स्वर्ग के अभिलाषी हो तो क्या कभी तुमने दान दिया है, क्या तुम्हारी वाणी में मिठास है, क्या तुम्हारी ईश्वर के प्रति आस्था है ?''

''यमाचार्य जी, मैं झूठ नहीं बोलूँगा। मैंने कभी-कभार ही दान दिया है, वाणी से भी कभी-कभी कठोर वचन भी बोल जाता हूँ। विद्वानों की सेवा करने का भी मौका नहीं मिला।''

''तो बोलो, क्या उस अनजाने लोक में जाना चाहोगे ?'' यमाचार्य ने मुझे मझधार में छोड़ दिया।

''महाराज आप ही मुझे कोई रास्ता बताइये।'' मैं अपने हाथ से फिसलते स्वर्ग को नहीं छोड़ना चाहता था।

''हाँ, दूसरा रास्ता नरक है। नरक में रहने वाले लोगों के भी लक्षण सुन लो-

स्वर्गच्युतानामिह जीव लोके चत्वारि चिह्नानि भवन्ति देहे।
कार्पण्य वृत्ति स्वजनस्य निन्दा
दुश्शीलता असाधु सेवनम्॥

अर्थात् स्वर्ग से भ्रष्ट नारकीय जीवन जीने वाले व्यक्ति स्वभाव से कंजूस होते हैं, वे अपने सम्बन्धियों की निन्दा करने में नहीं चूकते, वे चरित्रहीन होते हैं तथा दुर्जनों की संगति में रहते हैं।

बोलो, क्या तुम्हारे स्वभाव में, नरक गामियों के लक्षण घटित होते हैं ?''

''हाँ, मैं थोड़ा बहुत कंजूस तो हूँ ही, कभी-कभी किसी की निन्दा करने में भी नहीं चूकता। मेरा चरि्तर भी बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता। वृष्ट व्यक्तियों के साथ भी मेरा मेल-जोल बना रहता है।'' मुझे अपने दोष प्रकट करने में संकोच नहीं हुआ।

''बड़ा विचित्र स्वभाव है आपका। सपने पाले हुए हैं स्वर्ग के और काम करते

क्रमशः पृ. ८ पर...

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य

-पं. उम्मेद सिंह विशारद

ऋत सत्य : ईश्वर ऋत सत्य है और भूत, भविष्य व वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता है। वह तीनों कमलों के चंपेट में नहीं आता है। अतः सत्य शब्द केवल मनुष्य से ही सम्बन्ध रखता है। ईश्वर से नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य की अपेक्षा असत्य होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर होते है वहा संयोग व वियोग अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में सयोंग, वियोग नहीं होता है, सदैव संयोग रहता है। अतऋ वास्तविक सत्य तो ऋतु सत्य है। हम संसार में जो जो पदार्थ प्राणीयों के कल्याण के लिए ईश्वर द्वारा प्रदत है उनके गुण कार्य स्वभाव सदैव एक रस रहते है वह कभी नहीं बदलते है जैसे सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की शीतलता, वायु का प्रवाह, अग्नि की उष्णता, जल की प्राणादायिनी शक्ति, धरती की ऊर्जा शक्ति, फलों में खटास, मिठास, उसी में अन्दर बीज की उत्पत्ति तथा ब्रह्मामण्ड की उत्पत्ति, स्थिति प्रवृत्ति, शरीर के इन्द्रियों का जन्म व मृत्यु नियमानुसार, आत्मा की नित्यता, आदि में सम्पूर्ण ब्रह्ममण्ड में अदृश्य रूप से ऋतु सत्य व्यवहार कार्य कर रहा है। इसलिए यहगूड़ रहस्य हैं। ऋतु सत्य द्वारा पदार्थों के गुण हमें सहज में प्राप्त हो रहे है इसलिए उनके प्रति हमारा ध्यान नहीं जाता है। इसलिए जीवन दायिनी पदार्थ ऋतु सत्य सदैव हमें प्राप्त है वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त है।

सत्य- मानवीय जगत में व्यवहारिक रूप में जो जो कर्म किये जाते है यदि वह कार्य आदान प्रदान में सच्चे है तो वह सत्य है यदि व्यवहार में छल कपट है तो असत्य है मानवीय जगत में 'कर्म' गुण कर्मानुसार बदलते रहते है। यदि मानवीय व्यवहार में प्रत्येक कर्म को सच्चाई से सत्य के आधार पर किये जाते, तो शान्ति बनी रहती है। ईश्वर ने मानव को कर्म करने को स्वतन्त्र रखा है और सत कर्म और असत्य कर्म मनुष्य के विवेक, पर निर्भर होते है तथा व्यवहारिक सत्य देश काल परिस्थितिनुसार बदलता रहता है।

जरा गहराई से विचार करे तो संसार में जो हमें दीखता है वह असत्य है और जो नहीं दिखता वही सत्य है। जो चलायमान है वह अस्थिर है, परिवर्तनशील है। वास्तव में वह अचलायमान स्थिर तथा अपरिवर्तन शील तत्व के आधार पर टिका हुआ है। हर गति तथा अगतिशिलता अचल, स्थिर अप्रवर्तन शील तत्व के कारण टिकी हुई है। जैसे वृक्ष दृश्य है तो बीज अदृश्य है। शरीर दृश्य है तो आत्मा अदृश्य है। इसी प्रकार संसार के प्रत्येक वदृश्य परिवर्तन शील है और उसके आधार ईश्वर और उसके गुण अपरिबर्तन शील है। आइए विचार करते है।

आत्म श्रद्धा का आधार सत्य है। - भारतवर्ष का इतिहास बताता है कि महाभारत काल के बाद ईश्वरीय धर्म वेदानुकूल प्राचीन पद्धति के अनुसार, सत्य पर आधारित मान्यताओं को सदैव के लिए प्रचारित करने के लिए एक सत्य का मंच आर्य समाज के संस्थापक, एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे। उन्होंने दो कार्य बहुत ही उत्तम सर्वहितकारी किये एक सतयार्थ मार्ग जानने हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और दूसरा कार्य मानव जीवन को सुखी व सत्यमार्गी बनाने के लिए संस्कार विधि अर्थात् जन्म से मृत्यु तक १६ संस्कारों को करने का विधान किया।

प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्म श्रद्धा या आत्म गौरव की एक तोल होती है, यह तौल क्या हैं अपनी वाणी विचार और क्रिया के सत्य असत्य के विवेचन का वह एक माप है, जिसमें वह अपने सम्बन्ध की मान्यता को स्थिर करता है। मनुष्य जितना सत्य से विमुख होगा उतना ही अपने आप में अश्रधालु बनता है। जिसने सत्य का परित्याग कर दिया समझो उसने अपने लिए सुख का मार्ग अवरूद्ध कर दिया। "सत्यदेव जायते नानृतम" सत्य की जय होती है असत्य की नहीं, सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। आत्मा स्वयं शाश्वत सत्य है। सत्य सरल भी है और स्वाभाविक भी है। यदि तुच्छ अहंकार और स्वार्थ मयता को प्रमुख न बनाया जाए तो सत्य तथ्य छिपाने की आवश्यकता ही न पड़े। सत्य की अभिव्यक्ति से ही जीवन की जटिलता का समाधान हो सकता है।

आत्मा के ऐश्वर्य और सत्य के शाश्वत स्वरूप को शाश्वत बनाए रखने के लिए, सत्य बोलना, सत्य पर चलना, ऋत सत्य पर आधारित मान्यताओं को मानना ही जीवन का अर्थात् जीव का प्रमुख कृत्य है। सत्यधारी को ईश्वर को ढूंढने जाने के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं है वह आत्मा में ही ईश्वरीय दर्शन का आनन्द लेता है। सत्य जीवन का मधुरता है जीवन की पूर्णता है।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप ।।

हम असत्य को सत्य अस्थिर परिवर्तनशील को अपरिवर्तन शील, क्षण झंगुर को सनातन और प्रतीतो के प्रति जागे हुए है और प्राप्त के प्रति सोए हुए है। असत्य के प्रति जागे हुए है और सत्य के प्रति सोये हुए है। असत्य के प्रति जागे हुए है और स्थिर के प्रति सोये हुए है। जीवन का लक्ष्य सत्य जानना है। हमारा जीवन असत्य में बीत

क्रमशः पृ. ८ पर...

"मनुष्य के ऊपर पाँच कारणों का विशेष प्रभाव"

-खुशहाल चन्द आर्य

मनुष्य का जीवन अच्छा बने या बुरा बने इसके लिए उसके जीवन पर पाँच कारणों का प्रभाव विशेष दिखाई देता है। उन्हीं के अनुसार मनुष्य का जीवन अच्छा या बुरा बनता है। वे पाँच कारण इस भाँति हैं :-

१) **पूर्व जन्म में किये कर्मों के अनुसार :-** मनुष्य अपने पूर्व जन्म में यानि इस जन्म से पहले वाले जन्म में उसने अच्छे या बुरे जैसे भी कर्म किये थे इसी के अनुसार ईश्वर उस जीव को अगली योनि, जाति, आयु, भोग के रुप में देता है। जाति का तात्पर्य यह होता है कि उस जीव को अगली योनि मनुष्य, पशु-पक्षी या कीट-पतंग आदि की योनि उसके पिछले किये कर्मों के अनुसार देता है। इनमें मनुष्य योनि सब से उत्तम व श्रेष्ठ हैं। साथ ही यह योनि अंतिम योनि होने से मोक्ष का द्वार भी है। जो जीव का मुख्य लक्ष्य है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को धरती पर भेजता है। इसीलिए जीव का मनुष्य जीवन पाना उसके अच्छे किये कर्मों का फल है। जाति कभी बदली नहीं जाती यानि वह जीव उम्र भर उसी योनि में रहेगा। आयु और भोग अस्सी वर्ष की दी है। वह मनुष्य अपने जीवन में पूर्ण संयम से रहता है। योग, आसन, व्यायाम आदि करता है, भोजन पौष्टिक करता है, विचार सुन्दर रखता है, किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष की भावना नहीं रखता है। सदैव प्रसन्न चित्त रहता है, उसकी आयु अस्सी से अधिक हो जायेगी। यदि वह साधारण रूप से रहता है तो उसकी आयु अस्सी ही रहेगी। और यदि निम्न स्तर से खायेगा, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा या नहीं, उसके सुख के साधन क्या है, उसके जीवन में सुख-दुःख कैसे आयेंगे आदि। यह सब भोग में आता है। **अच्छा जीवन बिताने से आयु की भाँति भोग भी घटाया या बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार मनुष्य के ऊपर पूर्व जन्म के किये कर्मों का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है।**

२) **माता-पिता का प्रभाव :-** मनुष्य के ऊपर माता-पिता का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। जिस व्यक्ति के माता-पिता संयमी, निष्कपट, निष्छल, संस्कारित व उदार प्रवृत्ति के होते हैं जिनके जीवन में ईमानदारी हो, झूठ नहीं बोलते हों, सबसे सुन्दर व्यवहार करते हों, बच्चों को भी अच्छी शिक्षा देते हों, उनकी सन्तान अपने माता-पिता को देखकर वैसे ही बन जाती है। इसके विपरीत जिनके माता-पिता का जीवन इससे उलट है उनके बच्चे भी बेईमान, दुराचारी, दुष्ट, लफंगे व कमजोर होते हैं। इस प्रकार माता-पिता का प्रभाव भी बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। उदाहरण के तौर पर श्री राम के ऊपर माता कौशल्या का और शिवा जी के ऊपर माता जीजाबाई का प्रभाव पड़ा था।

३) **परिवार के सदस्यों का प्रभाव :-** बच्चों पर माता-पिता को प्रभाव के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। परिवार के चाचा-चाची, ताई-ताऊ, दादा-दादी तथा उनकी सन्तान जिनके साथ बच्चा सदैव मिलता-जुलता रहता है, उनका प्रभाव भी बहुत पड़ता है। साथ ही रिश्तेदारों व पड़ोसियों का प्रभाव भी बहुत पड़ता है। बच्चे का आठ-दस वर्ष तक का जीवन अपने घर के सदस्यों के साथ अधिक बीतता है। इसलिए घर का वातावरण अच्छा होगा तो बच्चे के चरित्र तथा स्वभाव पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। अन्यथा बच्चे के चरित्र, स्वभाव व व्यवहार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

४) **बच्चे के साथियों व मित्रों का प्रभाव :-** बच्चे के ऊपर उसके साथियों व मित्रों का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। यदि बच्चा अपने अच्छे माता-पिता व अच्छे परिवार में पलकर अच्छा है परन्तु बाद में उसको साथी व मित्र गलत मिल गये, बेईमान, झूठे व चरित्रहीन मिल गये, ताश, चौपड़, खेलने वाले, सिनेमा-फिल्म देखने वाले, जुआ खेलने वाले तथा अन्य प्रकार के गलत व अशलील काम करने वाले मिल गये तो बच्चे पर उनकी कुसंगति का बुरा प्रभाव पड़ेगा और बच्चा उन्हीं के कुमार्ग पर चलने लगेगा। इसलिए बच्चे के माता-पिता तथा उसके अभिभावकों को बच्चे का बहुत ध्यान रखना चाहिए। उसके साथी-मित्र कैसे हैं, वह कहाँ-कहाँ आता जाता है उससे मिलने वाले व्यक्ति कैसे हैं ? इन सब बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। यदि उसके साथी व मित्र अच्छे नहीं हैं तो उनसे दूर रखने के लिए किसी अच्छे गुरुकुल में भेज देना चाहिए ताकि वह कुसंगति से बच सके।

५) **शिक्षा का प्रभाव :-** बच्चा जिस स्कूल में पढ़ता है, उस स्कूल के शिक्षक यदि अच्छे नहीं है और यदि उसकी कक्षा के विद्यार्थी अच्छे नहीं है तो इन दोनों का प्रभाव बच्चे पर बहुत अधिक पड़ता है। स्कूल की पढ़ाई का भी बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि बच्चों को इतिहास में राम, कृष्ण, महात्मा चाणक्य, वीर शिवाजी, महाराणा

प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह, वीर सावरकर, सुभाषचन्द्र बोस व महर्षि दयानन्द के जीवन पर कोई प्रकाश नहीं डालोगे तो बच्चों को अपने राष्ट्र व अपने इतिहास पर गौरव का आभास कैसे होगा ? यदि बच्चों को बावर, हुंमायु, अकबर, अंग्रेजों का इतिहास और कांग्रेस का इतिहास ही पढ़ाया जायेगा तो वह बच्चा देश के सच्चे इतिहास से तो अनभिज्ञ ही रहेगा, इस स्थिति में वह देश के इतिहास पर क्या गौरव का अनुभव करेगा ? इसलिए बच्चों पर पढ़ाई का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है ।

देश की सही उन्नति व आदर्श भारत तभी बनेगा जब हमारी सरकार गुरुकुलों की तरफ विसेष ध्यान देकर उनको प्रोत्साहित करेगी और प्रत्येक भारतीय अपने बच्चे व बच्चियों को गुरुकुलों में भेजकर प्रसन्न व आनन्दित होंगे । यह प्रसन्नता की बात है कि आज कल गुरुकुलों में केवल संस्कृत में वेद तथा ऋषि-मुनियों कृत आर्य ग्रन्थ ही नहीं पढ़ये जाते बल्कि उनके साथ विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल तथा कृषि व शिल्पकला सम्बन्धी शिक्षा भी दी जाती है जिससे गुरुकुलों के बच्चों का भविष्य उज्जवल बन सके । मेरा स्वयं का यह विचार है कि यदि भारत को पुनः "विश्व गुरु" के शीर्ष स्थान पर सुशोभित करना चाहते हो तो पहले की भाँति सरकार को गुरुकुलों की तरफ विशेष ध्यान देना पड़ेगा और जब गुरुकुलों में पढ़े हुए विद्यार्थियों के हाथों सरकार की बाग-डोर आ जायेगी तभी भारत का चरित्र उभर कर विश्व के सामने आएगा और तभी भारत चरम उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्य "विश्व गुरु" के उच्चपद को प्राप्त कर सकेगा ।

"खुशहाल की आँखें भारत के उस गौरवपूर्ण समय की प्रतीक्षा में है । आशा है आदरणीय नरेन्द्र मोदी के शासन काल में वह समय शीघ्र ही आएगा ।"

...पृ. ५ का शेष

हैं नरक के । जहाँ जाना चाहते हैं वहाँ का ज्ञान नहीं और जहाँ नहीं जाते उसी के अवगुणों को सीने में चिपकाये फिर रहे हो ।" यमाचार्य ने मुझे टोकते हुए कहा ।

"तो फिर करूँ क्या ? स्वर्ग में जा नहीं सकता और नरक में जाना नहीं चाहता । तो कोई तीसरा रास्ता है ?"

"हाँ, तीसरा रास्ता भी है और वह रास्ता मनुष्य लोक को जाता है । संस्कृत में कहा गया है -

येषां न विद्या तपो न दानं ज्ञानं न शीलं गुणों न धर्म ।
ते मर्त्यलोके भुविभार भूताः मनुष्य रुपेम मृगाश्चरान्ति ॥

अर्थात् जिनके पास विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म नहीं है वे इस मनुष्य लोक के भार बनकर मनुष्य के रूप पशुओं के समान विचरण करते हैं ।

अब बोलो, तुम्हारे स्वभाव में ज्ञान, तप, दान, शील, गुण आदि मनुष्य लोक की विशेषताएँ है ?"

"नहीं यमाचार्य जी, न तो मुझे मनुष्य लोक में जीना आया और न स्वर्ग लोक के गुणों को संजोकर रख सका और जिन नारकीय दुर्गुणों को मैं ढो रहा हूँ वहाँ में जाना नहीं चाहती । अब आप ही मेरा मार्ग दर्शन कीजिए ।"

"वत्स, स्वर्ग या नरक की कल्पना, ये सब सकाम कर्म हैं । तुम स्वर्ग और नरक के चक्कर में पड़ते ही क्यों हो ? निष्काम भाव से कर्म करो । निष्काम कर्म के सम्मुख स्वर्ग और नरक छोटे पड़ जाते है । **'न कर्म लिप्यते नरे'** यही वेद का संदेश है और यही गीता का सद्ज्ञान है ।" यमाचार्य ने नचिकेता के समान मानो मुझे भी आत्मज्ञान वरदान दे दिया ।

मैंने ही ज्यों ही श्रद्धाभिभूत होकर यमाचार्य को प्रणाम करने के लिए मस्तक झुकाया, मेरा मस्तक पलंग के पावे से टकरा गया, नींद टूट गई और सपना विखर गया पर यह सपना जीवन की सच्चाई को प्रकट कर गया ।

...पृ. ६ का शेष

रहा है, हम चारों ओर से असत्य से घिरे हुए है । क्योंकि ऋत सत्य सर्वव्यापक है और निकटतम होने के कारण अदृश्य है । सत्य हमारे जन्म से पहले भी था और हमारी मृत्यु के बाद भी रहेगा, इसलिए हमारी खोज का विषयऋत सत्य ही होना चाहिए ।

सत्य असत्य के मूलगत भेद क्या है ।- विश्य ऋत सत्य के आधार पर टिका हुआ है । असत्य वस्तु असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर उसके तोड़ने वाले तत्व रहते है, इसी के अर्न्तद्वन्द्व कहते हैं । असत्य के पेट में पड़ा जो अन्दर का विरोध है, वह सत्य को धीरे-धीरे फोड़ता जाता है और असत्य के भीतर सत्य अपने पैने पन से उभर आता है । क्योंकि सत्य दुविधा रहित व द्वेष रहित होता है । जहां भीतर सत्य और असत्य होंगे वहीं तो संघर्ष होगा । हमने जितनी भी संस्थाएं व धर्म सम्प्रदाय बनाए है उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को टूटना है । कोर्ट में वकील सत्य को टूटने के लिए ही तो लड़ते है और जज का कार्य सत्य असत्य को ढूंड निकालना है । तभी वेदों ने कहा है सारा संसार ऋत सत्य पर टिका हुआ है ।

निष्कर्ष :- वेद, उपनिपिद, दर्शन शास्त्र, ब्रह्मण ग्रन्थ तथा जो वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ है उसमें वर्णित शिक्षा और संसार में सत्यवादी सत्यपथ गामी युग पुरुषों ने सत्य को जाना और प्रचार करते-करते अपने जीवनों की आहुति दे दी । यदि संसार के सभी धर्म सम्प्रदाय संगठन सत्य और ऋत सत्य पर व्यवहारिक चलने का आवाहन करे तो, मानव समाज में तमाम अन्धविश्वास रूढ़ी वादिता उग्रवाद हिंसा द्वेष, समाप्त हो जायेंगे । जिस दिन हम सत्य और ऋत सत्य को समझ जायेंगे और तदानु कुल व्यवहार करने लगगें बस उसी दिन से हम ईश्वर को समझ सकेंगे और तब हम किसी भी जगह खड़े होंगे तो यही कहेंगे सत्यमेव जयते नानृतम ।

वैचारिक

'महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण'

-मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा व विद्या पूरी होने पर वेद व सत्य मान्यताओं व प्रम्पराओं का प्रचार किया और इसके लिए अन्धविश्वासों, पाखण्ड, फलित ज्योतिष सहित सभी प्रकार की अविद्या व मिथ्या मान्यताओं का खण्डन किया। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती मथुरा से मिली थी। महर्षि दयानन्द देश भर में घूम कर अविद्या का नाश करने और विद्या की उन्नति करने हेतु वेदों का प्रचार करते थे। वह बंगाल पहुंते चो वहां उन्हें ब्रह्म समाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन ने अपने उपदेशों और व्याख्यानों में संस्कृत के स्थान पर आर्य भाषा हिन्दी को अपनाने की प्रेरणा की। महर्षि दयानन्द इन दिनों वस्त्र धारण न कर कौपीन मात्र धारण करते थे। श्री केशव चन्द्र सेन ने स्वामी जी को वस्त्र धारण करने का सुझाव दिया, जिसे उन्होंने महर्ष स्वीकार कर लिया। यद्यापि उन्हें वस्त्र धारण करने की इच्छा व आवश्यकतानुसार नहीं थी, परन्तु उन्हें भ्रमण करते हुए स्त्री-पुरुषों से युक्त मनुष्य समुदाय के सम्पर्क में आना पड़ता था। सम्भव था कि यदा-कदा वा अनजाने में कोई महिला भी उनसे वार्तालाप, अध्ययन व व्याख्यान में आ सकती थीं। अतः मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ब्रह्म नेता सेन महाशय का यह सुझाव भी तत्काल स्वीकार कर लिया।

समय व्यतीत होता रहा और महर्षि दयानन्द काशी में प्रचार कर रहे थे। वहां डिपुटी कलेक्टर राजा जयकृष्ण दास आपके भक्त, अनुयायी व सहयोगी बन गये। आपने स्वामी जी को सुझाव दिया कि आपके श्रीमुख से उत्तम प्रवचन व व्याख्यान प्रस्तुत किये जाते हैं। आपके विचारों का प्रवचनों से वही लोग लाभान्वित होते व हो सकते हैं जो कि उसमें उपस्थित होते हैं। जो लोग लाभान्वित होना चाहें, परन्तु किन्हीं कारणों से वहां न आ सकें, उन्हें आपके विचारों को जानने का लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। कालान्तर में जब आप नहीं रहेंगे तब भी आपके विचार, मान्यताओं व वैदिक सिद्धान्तों से समकालिक व आने वाली सन्ततियां वैदिक ज्ञान से वंचित रहेंगी। यदि आप अपने विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का एक विस्तृत ग्रन्थ लिख दें तो इन सभी समस्याओं का निदान हो जायेगा। महर्षि दयानन्द इस उत्तम प्रस्ताव को सुनकर प्रसन्न हुए और उसे उन्होंने तत्काल स्वीकार कर लिया। अनुमान है कि उसके तीन माह के अन्दर ही सन् १८७४ में आदिम सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ तैयार कर दिया। यह सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण था। आपने कुछ समय पहले ही आर्यभाषा हिन्दी सीखना आरम्भ किया था। अतः भाषा के परिमार्जन की आवश्यकता थी। स्वामी जी ने जिन लेखकों को बोलकर यह ग्रन्थ लिखाया था, वह पौराणिक विचारों के थे। अतः वौराणिक मनोवृत्ति के कारण उन्होंने स्तायर्थ प्रकाश में आपके आशय के विपरीत कुछ वचन डाल दिये थे, जिनका सुधार व परिमार्जन अपेक्षित था। अतः ऋषि दयानन्द ने मृत्यु से पूर्व सन् १८८३ में सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित संस्करण तैयार कर दिया जो उनकी मृत्यु के समय मुद्राणाधीन था। ३० अक्टूबर १८८३ को स्वामी की मृत्यु हो जाने पर यह ग्रन्थरल सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ। अतः सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ के लेखन की प्रेरणा भी उन्हें अपने भक्त व प्रशंसक राजा जयकृष्ण दास मुरादाबाद से वाराणसी में मिली थी, जिसे उन्होंने महर्ष व सधन्यवाद स्वीकार किया था।

आर्य समाज की स्थापना की प्रेरणा व प्रस्ताव महर्षि दयानन्द जी को मुम्बई में उनके अनेक भक्तों से मिला था। महर्षि दयान्द को यह प्रस्ताव पसन्द आया था, परन्तु उन्होंने वहां के लोगों को सावधान कर दिया था कि यदि आप आर्य समाज के संचालन में सतर्क व सावधान नहीं रहे तो आगे चलकर गड़बड़ घोटाला हो सकता है। महर्षि दयान्द ने मुम्बई में १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की स्थापना तो कर दी और उसके बाद आर्य समाज ने अनेक अभूतपूर्व कार्य भी किये। उनके आरम्भ में किये गये कार्य आज भी जारी है, परन्तु आर्य समाज का जो स्वरुप होना था वह आज देखने को नहीं मिल रहा है। आज आर्य समाजों में वह व्यवस्थायें देखने को नहीं मिलती जिन्हें हम आदर्श व्यवस्थायें कहते हैं जबकि अन्य अनेक संस्थायें हमसे कहीं आगे चल रही हैं। ऐसी स्थिति में अन्य क्या सोचते हैं, यह जानना तो कठिन है, परन्तु आर्य समाज के सदस्य व ऋषि भक्त भी आर्य समाज व इसकी आंतरिक सभाओं के क्रियाकलापों से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं अपितु दुःखी अवश्य हैं। लोकैषणा, स्वार्थ और

पदलोलुपता के आन्तरिक शत्रुओं ने आर्य समाज को भारी हानि पहुंचाई है और स्थिति वर्तमान में भी दुर्भाग्यपूर्ण है । इससे लगते है कि ऋषि की आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर दी गई चेतावनी सत्य सिद्ध हो रही है । यहां हमारा उद्देश्य यह बताना था कि आर्य समाज की स्थापना भी ऋषि ने अपने सच्चे भक्तों के आग्रह पर उनके सहयोग से की थी ।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना के बाद महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित यजुर्वेद एवं ऋग्वेदभाष्य (सातवें मण्डल के अनेक सूक्तों तक), संस्कार विधि, आर्याभिविनय न अेक लघु ग्रन्थों की रचनायें की । यह लेखन कार्य इनके महत्व व आवश्यकता को देखकर कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्व. विवेक से सम्पन्न किये गये । इसके लिए महर्षि स्वयं सावधान थे, अतः इसके लिए उन्हें किसी व्यक्ति विशेष का कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं मिला जैसा कि सत्यार्थप्रकाश के लेखन के लिए मिला था ।

महर्षि दयानन्द जी का एक मुख्य कार्य अपने वर्चस्व की उत्तराधिकारिणी सभा, परोपकारिणी सभा की स्थापना का था । इसे महर्षि दयानन्द ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व उदयपुर में सम्पन्न किया था । यह उनकी अपनी मृत्यु विषयक निजी अनुभूतियों का परिणाम था । ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें यह आभास हो गया था कि वह जो वेद प्रचार और अन्य मतों की मिथ्या मान्यताओं व अन्धविश्वासों की समीक्षा एंव खम्डन-मण्डन करते हैं, उसकी अपने जीवन के प्रति घातक परिणाम हो सकता है । ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का कोई विवाद न हो, और उनके बाद भी उनके द्वारा स्थापित वा आरम्भ वेद प्रचार का कार्य सुचारु रुप से चलता रहे, इस पर विचार कर रही उन्होंने परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी । महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु वा महाप्रस्थान अजमेर में होने के कारण इस सभा का मुख्यालय वहीं बनाया गया जो आज भी सक्रिय रहकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगा हुआ है । यह कार्य भी उन्होंने स्वविवेक से किया जिससे आर्य समाज को बहुत लाभ हुआ । यदि परोपकारिणी सभा की स्थापना न हुई होती तो आर्य समाज के सामने कठिनाईयां आ सकती थीं ।

महर्षि दयानन्द जी अपने वैदिक सिद्धान्तों व विचारों के पक्के थे । यदि उनका कोई भक्त व अनुयायी उनके हित का कोई प्रस्ताव करता था जिसे उनके जीवन को हानि की आशंका होती थी, तो वह अपने अनुयायियों द्वारा किसी स्थान विशेष की यात्रा न करने के सुझाव को स्वीकार नहीं करते थे । ऐसा ही जोधपुर में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जाते समय हुआ था । उनके भक्त शाहपुरा रियासत के आर्य नरेश नाहरसिंह जी व अन्य कुछ भक्तों को स्वामी जी के जोधपुर जाने पर उनके जीवन को हानि होने की आशंका थी । उन्होंने स्वामी जी को यात्रा न करने वा वहां के लोगों से सावधान रहने व प्रचार में संयम बरतने का सुझाव दिया था । स्वामी जी ने यात्रा न करने का सुझाव स्वीकार नहीं किया और अपने अनुयायियों को कहा कि यदि लोग उनकी उंगिलयों को बत्तियों की तरह जला भी दे तो भी वह सत्य को प्रकट करने से न चूकेंगे । जोधपुर प्रवास में जिस बात की आशंका थी वही हुई । जोधपुर में उन्हें विष दिया गया जिसके परिणामस्वरुप वह रुग्ण हो गये । उनके उपचार में भी अनियमिततायें हुई । एक ऐसे चिकित्सक अलीमर्दन ने उनका उपचार किया जो अनुमानतः उनके प्रति द्वेष रखता था । स्वामी जी को विष दिये जाने के पीछे किसी बड़े राजनीतिक षड़यन्त्र होने की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता । इसका कारण था कि वह देश की आजादी के समर्थक थे । उन्होंने अपने सत्यार्थप्रकाश व आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में विदेशी सरकार के विरोध में विचार प्रकट किये थे । वह जोधपुर महाराजा की वैश्यावृत्ति आदि अन्य मिथ्याचार के भी घोर आलोचक थे और उसका कठोर शब्दों में खण्डन करते थे । अतः उनके जीवन को नष्ट करने के किसी बड़े षड़यंत्र की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता । जो भी हो, जोधपुर में उन्हें विष दिया गया, उपचार में गड़बड़ी हुई जिसके कारण ३० अक्टूबर सन् १८८३ को अजमेर में दीपावली के दिन उन्होंने अपनी इच्छा से ईश्वरोपासना करते हुए प्राणायायामपूर्वक श्वास छोड़ दिया और ब्रह्मलोक वा मोक्ष को प्राप्त हो गये ।

स्वामी दयानन्द जी उच्च कोटि के योगी और महाभारत के बाद वेदों के असाधारण व अपूर्व विद्वान थे । उनका जीवन सत्य के ग्रहण करने का सर्वोत्तम उदाहरण हैं । उन्होंने उन्हें दिये जाने वाली किसी अच्छे प्रस्ताव की उपेक्षा नहीं की, अपितु उन्हें स्वीकार कर सत्य के ग्रहण का प्रेरणापद उदाहरण प्रस्तुत किया । उनका स्थापित किया आर्य समाज अपनी आरम्भिक व उसके कुछ वर्ष के बाद के यश व कीर्ति को अक्षुण्ण नहीं रख पा रहा है । ईश्वर कृपा करे कि महर्षि दयानन्द का स्थापित किया आर्य समाज देश व संसार की आदर्श संस्था बन सके और उनके स्वप्न साकार हो । इसके लिए ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेकर निजी लोकैषणा व स्वार्थों का त्याग करना होगा जो असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है ।

हमारा अभिवाद नमस्ते ही क्यों

-डॉ गंगा शरण आर्य

वैदिक काल से वेदों को अन्दर भी 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग है उसके बाद ऋषियों के ग्रन्थों में भी 'नमस्ते' की ही प्रयोग है और सम्पूर्ण संस्कृत वाडमय भी 'नमस्ते' का ही प्रयोग है और अब भी मनुष्य-मनुष्य के बीच में परस्पर अभिवादन करने के लिए 'नमस्ते' शब्द बहुतायत रूप में प्रचलित है । आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त सब मनुष्य परस्पर 'नमस्ते' ही करते थे । महाभारत काल के उपरान्त भारत के पतनकाल में फैले मत-मतान्तर परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति व संस्कारों में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया । जो लोग अनपढ़ थे उन्होंने तो मत-मतान्तरों द्वारा फैलाई गई भ्रान्तियाँ चाहे किसी भी विषय में हो, को ज्यों का त्यों स्वीकारा ही, लेकिन पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने भी इन भ्रान्तियों को बिना किसी विराध के अपनी संस्कृति मान कर स्वीकार कर लिया । यह हमारी संस्कृति के बिखर जाने का बड़ा कारण बना ।

सनातन काल से ही 'नमस्ते' प्रचालित रहा है न कि 'नमस्कार' । व्याकरण की दृष्टि से 'नमस्ते' शब्द नमः+ते से मिलकर बना है । 'नमः' की जो विसर्ग (:) हैं, सन्धि में विसर्गों को आधा 'स्' हो जाता है । इसलिए 'नमस्ते' उच्चारित होता है । नमस्ते में जो 'ते' शब्द है वो युष्मद् शब्द का चतुर्थी विभक्ति के एकवचन में तुभ्यम् के स्थान पर विकल्प रूप का अर्थ सम्मान करता हूँ । ऐसा है । नमस्कार के प्रयोग में अहंकार ही तो शेष रहता है झुकता नहीं । ऋषि मुनियों ने कभी भी नमस्कार शब्द का प्रयोग नहीं किया क्योंकि ये संज्ञा है न कि वाक्य, जबकि नमस्ते अपने आप में शब्द होते हुए भी एक पूरा वाक्य है जिसका अर्थ मैं आपका सम्मान करता हूँ । क्योंकि चतुर्थी विभक्ति के साथ नमः का प्रयोग किया जाता है जैसे :- गुरूवे नमः, शिवाय नमः रामाय नमः आदि । लेकिन परमात्मा के केवल मुख्य और निज नाम 'ओ३म्' नमः उच्चारण किया जाता है ओमाय नमः नहीं।

रही बात हाथ जोड़कर नमस्ते करने की तो यह अपना भाव स्पष्ट करने की बाह्य प्रक्रिया है । लोक व्यवहार में बुद्धि से, हृदय से एवं शरीर द्वारा नम्र करके 'नमस्ते' की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है । आजकल तो भारतीय बच्चों पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव बढ़ता जा रहा है । हाय, हैलो की संस्कृति पर करती जा रही है । अभिवादन शब्द के सही अर्थ को न समझकर अनभिज्ञ लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है और अभिवादन को व्यक्त करने वाला 'नमस्ते' आंशिक रूप से दब गया है । इसके स्थान पर अभिवादन की दूषित परिपाटियों ने अपना प्रभाव जमा लिया । अभिवादन में हाथ से हाथ मिलकर नमस्ते बनता है तो यह कहना भी इन्हीं दूषित प्रणालियों में से एक है । हाय, यह शब्द सुनते ही तो ऐसा लगता है मानो किसी के मरने की खबर सुन ली हो और हेलो शब्द तो केवल टेलीफोन आविष्कारक की पत्नी का नाम है उसका कोई अर्थ तो निकलता ही नहीं । इसके अतिरिक्ति परस्पर हाथ मिलाने की प्रक्रिया में समय भी अधिक व्यय होता है एवं संक्रामक रोग भी प्रसारित हो सकता है । इंग्लैण्ड से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'न्यू इंग्लैंड जनरल ऑफ मेडिसन' में अनुभवी डॉक्टरों ने लोगों को अपनी राय देते हुए कहा है कि "सौ में से चालीस लोगों को जुकाम के कीटाणु हाथ मिलाने से ही पकड़ लेते हैं । इसलिए सदैव हाथ जोड़कर नमस्ते ही करें हाथ मिलाने वालों से सावधान रहें । वैसे भी हाथ जोड़कर 'नमस्ते' कहकर किए जाने वाले अभिवादन में जो आत्मीयता झलकती है वह अन्य में नहीं । पं. अयोध्याप्रसाद जी वैदिक मिशनरी के शब्दों में इसकी व्याख्या इस प्रकार है । With all the knowledge of my mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the should untot you, अर्थात् मेरे मस्तिष्क में जितना ज्ञान है, हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्रेम है, उसे सबके साथ में आपकी आत्मी के प्रति नमन करता हूँ । हार्दिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक अभिवादन 'नमस्ते' करने में जहाँ छुआछूत के विभिन्न रोगों से बचता हैं वहाँ इसके साथ किसी अज्ञात व्यक्ति से मिलते समय अधिक सुरक्षित भी रहता है । परमपिता परमात्मा को भी नमस्कार तो किया जाता है लेकिन हमारी आँखे उस समय बंद होती हैं, जब परमेश्वर का ध्यान करने के लिए, जो कि हाथ जोड़ने की बजाए यजन मुद्रा में या अंजलि मुद्रा में बैठकर आसानी से किया जा सकता है । लेकिन आज हमारे देशके पढ़े लिखे स्नातक हो या अनपढ़ या वेदों को आधार मानते हुए भी अनजान बनकर अपनी मनमानी करने वाले ढोंगी पण्डित या गुरुवादी सबने अपने-अपने हिसाब से अपना-अपना अभिवादन बना लिया जैसे जय राम जी की, राम-राम जी, जय सियाराम, हरि ओम् जय गोपाला जी, जय राधे-राधे, जय श्री कृष्णा, जय माता की, समाल वालेकुम, आदाब बर्ज, गुड-मॉर्निंग, गुड-नाइट, गुड-आफ्टरनून, जय गुरुदेव, राधास्वाम, धन-धन सतगुरू तेरा ही आसरा, आदि-आदि । यह सब प्रकार के अभिवादन व्यक्तिवाचक, क्षेत्रीयवाचक, वर्गवाचक हैं जो साम्प्रदायिकता व संकीर्णता एवं जातिवाद को उभारने वाले होने से देश व समाज के लिए एक अलगाववाद राष्ट्रीय रोग है, जिसका वायरस निरन्तर फैलता ही जा रहा है । आज हमारे देश को पुनः सोने की चिड़िया कहलाने के लिए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की जरूरत है जो उपरोक्त अभिवादनों के प्रयोग करने से खतरे में पड़ जाती है । विभिन्न अभिवादनों के प्रयोग में कुछ लोगों का कहना है कि यह तो अपनी-अपनी विचारधारा है, उनका यह कहना अनुचित है क्योंकि विचारों का टकराव व मित्रता में दरार पैदा करके अलगाववाद को ही उत्पन्न करता हैं "जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली भारतीय संस्कृति का नाश कर देता है ।

और यदि मान भी लिया जाए राम, कृष्ण, राधे-२ आदि उपरोक्त अभिवादन पहले से चले आ रहे हैं तो क्या ये अभिवादन करने वाले लोग बता सकते हैं कि राम व कृष्ण के जन्म से पूर्व व उनके जीवनकाल में उनके माता-पिता किस शब्द का प्रयोग

कर अभिवादन करते थे। गुरुओं व ढोंगी पण्डितोंके द्वारा फैलाए गए अभिवादनों का भी उनसे पहले होना साबित ही नहीं हो सकता क्योंकि उनके द्वारा फैलाए गए अभिवादन भी उनके द्वारा फैलाए गए ढोंग के बाद ही पनपे। इसके अतिरिक्त उपरोक्त अभिवादनों के प्रयोग से सामने वाले व्यक्ति का सम्मान होता ही नहीं है। हम यह नहीं करें क्योंकि महापुरुषों राम, कृष्ण आदि का नाम नहीं लेना चाहिए परन्तु ऐतिहासिक समय स्थान व परिस्थिति का भी ध्यान रखना हमारा ही कर्त्तव्य है जय श्री राम करके हम यह तो दर्शाते हैं कि हम राम भक्त है या राम को अपना आदर्श मानते हैं लेकिन अपने आदर्श स्वरूप राम जैसे महान पुरुषों से सम्बन्धित सभी ऐतिहासिक जानकारी रखना भी हमारा कर्त्तव्य है, उदाहरण स्वरूप कहा जाता है कि राम ने रावण को मारा तो विजय दिवस के रूप में दशहरा त्यौहार मनाया जाता है और राम दीपावली पर घर-अयोध्या पर पहुँचे थे इसलिए दीपावली मनाई जाती है। लेकिन राम तो रावण को मारकर अगले दिन ही पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या पहुँच गए थे। तो अब दशहरा और दीपावली के बीच २० दिन का अंतर कैसे आ गया ? वस्तुतः मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम चैत्र शुक्ल पक्ष प्रथम जिस दिन उनका राज्याभिषेक होना था १४ वर्ष का वनवास काटकर ठीक उसी दिन आयोध्या लौटे थे तो दीपावली कार्तिक अमावस्या को क्यों मनाई जाती है आदि-आदि अनके ऐसे प्रश्न है जिसको उठाना विषय से अलग होने वाली बात होगी। इसलिए उन पर न जाते हुए हमें अपने आदर्श महापुरूषों का आदर तो करना हीचाहिए लेकिन जब हम किसी से मिलते हैं तो उसका आदर करने के लिए राम और कृष्ण जिस संस्कृति का अनुमोदन करते थे उसी का अनुकरण कर 'नमस्ते' ही करना चाहिए और रही बात पढ़े लिखे लोगों द्वारा अंग्रेजी संस्कृति से प्रभावित होकर गुड-मार्निंग व गुड-इवनिंग आदि के प्रयोग की, जो ज़रा विचार करो कि गुड-मार्निंग करने वाले व्यक्ति ने यदि विदेश में (अमेरिका) रहने वाले अपने रिश्तेदार को प्रातः उठकर गुड-मार्निंग कहा तो क्या विदेशी रिश्तेदार या मित्र उसका मजाक नहीं बनाएगा ? क्योंकि जब यहाँ प्रातः उठकर गुड-इवनिंग कहा तो साथ में बैठे परिवार के लोग मजाक उड़ाएगे कि सुबह-सुबह गुड-मार्निंग की बजाए गुड-इवनिंग कह रहे हैं। पहली बात तो यह है कि गुड-मार्निंग का शाब्दिक अर्थ "अच्छी सुबह", गुड-आफ्टरनीन का 'अच्छी दोपहर' और गुड-इवनिंग का 'अच्छी शाम' ऐसा है, लेकिन ये जो दिन की बेलाओं की प्रशंसा है जबकि दिन ही ईश्वर द्वारा बनाया गया है जो सभी के लिए एक समान अच्छा है। इसमें मेरा अभिवादन तो है ही नहीं, दूसरी बात जिस संस्कृति का अनुकरण करने पर हमारा मजाक बन जाए उसका अनुसार क्यों करें ? इस प्रकार परस्पर अभिवादन के लिए जय सिया राम, राम-राम, जय श्री कृष्ण, राधे कृष्णा आदि कहने पर भी राम-कृष्ण आदि की जय तो होती है पर सामने वाले व्यक्ति का अभिवादन नहीं। आजकल हमारे सिखा भाई भी परस्पर 'सत् श्री अकाल' का प्रयोग कर अभिवादन करते हैं। जबकि 'गुरू ग्रन्थ साहिब' के अनुसार 'नमस्ते अजाते-नमस्ते अपाते' आदि का प्रयोग है जो 'नमस्ते' कहने का ही विधान है। यहाँ यह बात विचारणीय है कि दसों गुरु किस अभिवादन वाक्य का प्रयोग करते थे ? सच्चाई जो कि आज भी जनसाखियों से सिद्ध होती है यही है कि परस्पर मिलते समय सभी 'नमस्ते' ही करते थे। स्वयं को आर्य-हिन्दूस्तानी ही समझते थे, धोती पहनते थे और यज्ञपवीत (जनेऊ) भी धारण करते थे। अत्यंत दुःख व आश्चर्य की बात है कि यह सबकुछ उनके धर्म-ग्रन्थों में विद्यमान होते हुए भी वे अलगाववादी प्रकृति होने के कारण जानते हुए भी मानने से इन्कार करते हैं। 'सत् श्री अकाल' तो उनके द्वारा प्रयोग किया जाने वाला युद्धकालीन जयघोष है। जैसे मुसलमानों के द्वारा अभिवादन के लिए आदाब अर्ज या सलाम वालेकुम प्रयोग होता है लेकिन उनका युद्धकालीन जयघोष अल्लाह-उ-अकवर हैं। ठीक ऐसे ही युद्धकाल में हमारे महापुरूषों को आदर्श रखा जाता था और जय श्री राम कृष्ण, जय दुर्गा,जय मां काली तथा हर-हर महादेव आदि-२ जयघोषों को प्रयोग किया जाता था लेकिन मैंने पहले भी स्पष्ट किया है कि परस्पर अभिवादन के लिए हमें वैदिक संस्कृति के अनुसार 'नमस्ते' का प्रयोग करने पर परस्पर का भाव स्पष्ट होता है एक-दुसरे के प्रति समन का भाव दिखता है। जब दोनों और से इस प्रकार की नम्रता की अभिव्यक्ति हो तो प्रेम बढ़ेगा ही और परस्पर ज्ञान का आदान-प्रदान प्रारंभ होने का सिलसिला जारी हो जाएगा, जो मनुष्य का मुख्य उद्देश्य है।

सन् १९५३ ई. में जब भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू डलेश वार्ता के अवसर पर अमेरिका में फोटोग्राफरों से निरन्तर हाथ मिलाने के कारण थक गए तो उन्होंने भी कहा कि हमें भारतीय ढंग से अभिवादन करना चाहिए। इसके अलावा भारतीय राजदूतों द्वारा विदेशों में विभिन्न समारोहों के अवसरों पर सर्वत्र 'नमस्ते' का ही प्रयोग होते हुए पाया जाता है। भारत के प्रधानमंत्री जब रूस की यात्रा पर गए थे तो उनके स्वागतार्थ मार्ग में पट्टियों पर 'नमस्ते' और 'स्वागतम्' ही लिखा था, जब रूस के प्रधानमंत्री खुश्चेव और प्रधान बुलगानिन भारत में आये थे तो उन्होंने सर्वत्र हाथ जोड़कर ही अभिवादन किया। जब अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तब विचार हुआ कि किसी एक अभिवादन को सर्व-मान्यता देकर फिर उसका प्रयोग किया जाए। इसके निर्णय के लिए वहाँ पर उस समय अनेकों मतावलम्बियों ने अपने-अपने अभिवादनों की व्याख्या, प्रशंसा व विशेषताएँ स्पष्ट की। उसी समय वहाँ पर भारत के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान पण्डित अयोध्या प्रसाद जी वैदिक रिसर्च स्कॉलर कोलकत्ता ने 'नमस्ते' शब्द को विशेषाताओं पर प्रकाश डाला और व्याख्या की जिसका परिणाम यह निकला कि कि यह 'नमस्ते' शब्द वहाँ पर सभी को इतना प्रिय लगा कि सर्व सम्मति से अभिवादन के रूप में केवल 'नमस्ते' को ही सबके द्वारा अपनाया गया। अतः हमें समस्त बेसिर पैर के अवैदिक अभिवादनों को त्याग कर भारतीय (अर्यावर्तीय) सनातन अभिवादन 'नमस्ते' का ही प्रयोग करना चाहिए।

దౌహృదిని

(ఋషుల దృష్టిలో గర్భిణీస్త్రీ)

-డా॥ కోడూరి సుబ్బారావు

(గత సంచిక తరువాయి.....)

40వ సూత్రము : గర్భవతియైన స్త్రీ దొంతుక కూర్చుండరాదు. మిక్కిలి ఎత్తైన, మిక్కిలి పల్లపు ప్రాంతములలో తిరుగరాదు. మల మూత్ర అపానవాయు వేగములను (తొందరలను) ఆపరాదు. శక్తికి మంచి పరిశ్రమించరాదు. కష్టమైన పనులు చేయరాదు. అతివేడి, అతి తీక్ష్ణమైన వస్తువులను సేవించరాదు. ఎక్కువ కాలము ఆకలితో నుండరాదు. ఆ విధముగా నున్న గర్భము కృశించుట గాని, శిశువు మరణించుటగాని గర్భస్రావముగాని జరుగవచ్చును.

41వ సూత్రము : గర్భమునకు దెబ్బ తగులుటవలన, గర్భమును గట్టిగా అదుముటవలన, మిక్కిలి లోతైన బావులు, లోయలు చూచుట వలన గర్భస్రావము జరుగవచ్చును. కాన వాటికి దూరముగా నుండవలెను. అధికముగా కుదుపును కిలిగించు వాహనములపై ప్రయాణము చేయరాదు. భయంకరమైన శబ్దములు గాని, దుఃఖమును, భయమును కలిగించు వార్తలను గాని వినరాదు. ఏ మాత్రము పరిశ్రమచేయక కదలక మెదలక పరుండుట కూడా మంచిది కాదు. అందువలన గర్భము లోని ప్రేగు శిశువు మెడకు చుట్టుకొని శిశువు మరణించ వచ్చును. అందుచే సామానన్య గృహ కృత్యములు, నడకవంటి వ్యాయామముచేయుట మంచిది. ప్రత్యేక వ్యాయామము కూడా వైద్యుల ద్వారా తెలిసికొని చేయుట మంచిది.

42, 43వ సూత్రములు : గర్భిణీ స్త్రీ నగ్నముగా తిరుగుట గాని, పరుండుట గాని చేసిన పిచ్చిపిల్లలు పుట్టుదురు. ఎక్కువ జగడములు చేయునట్టి క్రూరులు పుట్టుదురు. మైథునము చేసిన కాముకుడు పుట్టును. నిరంతరము శోకించుచుండిన అధైర్యవంతుడు, బలహీనుడు, అల్పాయుష్కుడు పుట్టును. ఇతరుల ధనమును దొంగిలించిన దొంగలు, సోమరులు, ద్రోహులు, సంఘ విద్రోహులు పుట్టుదురు. ఎక్కువ క్రోధము చేసిన ఎక్కువ కోప స్వభావము కలవారు పుట్టుదురు. అధిక నిద్రవలన సోమరులు, మూర్ఖులు, మందబుద్ధి కలవారు పుట్టుదురు. మద్యము సేవించిన వికలచిత్తులు, ఎక్కువ తీపి తినిన ప్రమేహ రోగులు (Diabetic) అధిక పులుపు తినిన చర్మ రోగులు, అధిక తిన్న అల్పవయసులోనే జుట్టు నెరిసిపోవు పిల్లలు పుట్టుదురు. అతి వేగముగా తినుచున్న దుర్బలులు, నపుంసకులు పుట్టుదురు. చేదు పదార్థములు తిన్న కృశాంగులు పుట్టుదురు.

44వ సూత్రము : పై సూత్రము గర్భిణీ స్త్రీ ఆహారము పుట్టబోవు సంతానముపై ఎటువంటి ప్రభావము కలిగించుచున్నదో తెలుపుచున్నది. ఈ సూత్రమునందు పురుషులు కూడ గర్భాధాన ప్రయోగ మంది కొన్ని నెలలు ఈ నియమము పాటించవలెననియు లేకున్న వారి వీర్యము పై విధమైన రోగ సంక్రమణకు గురియగుననియు హెచ్చరించుచున్నది.

సుశ్రుత సంహిత శరీర స్థానములోని పదవ అధ్యాయము పూర్తిగా గర్భిణీ స్త్రీ తీసుకొనవలసిన జాగ్రత్తలను, శిశు సంరక్షణను వివరించును. అందు రెండవ సూత్రము గర్భిణీ స్త్రీ ఆచరించవలసిన సామాన్యమైన నియమములను ఈ విధముగా తెలుపుచున్నది. "గర్భిణీ ప్రథమదివ సాత్ప్రభృతి నిత్యం ప్రహష్టా శుచ్యలఙ్కృతా శుక్లపసనా శాన్తి మఙ్గళ దేవతా బ్రాహ్మణగురుపరా చ భవేత్ . . . హృద్యం ద్రవమధుర ప్రాయం స్నిగ్ధం దీపనీయ సంస్కృతం చ భోజనం భోజయేత్ సామాన్యమేతదా ప్రసవాత్ ॥

(సుశ్రుత.శరీర. 10-2)

గర్భిణీ గర్భమును ధరించిన దినము నుండి ప్రతి దినము సంతోషముగా నుండవలెను. శుభ్రమైన తెల్లని వస్త్రములను ధరింపవలెను. శాంతమనస్కురాలు, అందరిమేలు కోరునది, దేవ బ్రాహ్మణ గురుజనులను ప్రీతితో సేవించునది కావలెను. మలినులు, వికృతరూపులు, హీనులు నగువారిని తాకరాదు. దుర్వ్యసనములకు, హృదయ విదారక దృశ్యములకు దూరముగా నుండవలెను. అందోళన కలిగించు విషయములను వినరాదు. పాసిపోయిన ఎండిన, వాసన వచ్చుచున్న ఆహారమును భుజించరాదు. ఎక్కువగా బయట తిరుగుట, పాడుపడిన గృహములలో నుండుట, శ్మశానములకు వెళ్లుట, వృక్షముల నీడలే విశ్రమించుట, కోపము తెచ్చుకొనుట, భయపడుట, ఎక్కువగా అరచుట మంచిది కాదు. ఇవి యన్నియు గర్భమునకు హానిని కలిగించును. ప్రతి దినము శరీరమునకు చక్కగా తైలము రాచుకొని, నలుగు పెట్టుకొని స్నానము చేయవలెను. శరీరమునకు ఆయాసము కలిగించు పనులు వర్జించవలెను. గర్భిణీ కఠినమైన ఆసన శయనాదులపై విశ్రమించరాదు. హితకరమైన, మధురమైన, స్నిగ్ధమైన అగ్నిదీప్తిని కలిగించు భోజన పానీయములు సేవించవలెను. ఇవన్నియు ప్రసవ పర్యంతము పాటించుచుండవలసిన సామాన్య నియమములు.

చరక సంహితలో శరీర స్థానము 4-18లో

"న మదకరాణి ఖాద్యాని అభ్యవహరేత్ । న యానం అధిరోహేత్ । న మాంసం అశ్నీయాత్ । సర్వేంద్రియ ప్రతికూలాశ్చ భవాన్ దూరతః పరివర్జయేత్ । యచ్చ అస్యత్ అపి కించిత్ స్త్రియః విద్యుః ।

"గర్భిణీ స్త్రీ మదకరములైన మత్తు పదార్థములు సేవింపరాదు. కుదుపును కలిగించు వాహనములలో పయనిఞచరాదు. మాంసమును తినరాదు. ఇంద్రియ ప్రతికూల భావనలు దూరము చేసికొనవలెను. అనుభవజ్ఞులైన స్త్రీల పరామర్శలను పాటించవలెను." అని చెప్పబడినది.

ఆధునిక విజ్ఞానము కూడ పై జాగ్రత్తలనన్నిటిని అంగీకరించును. పై వాటితో బాటు ఆధునిక వైద్యులు మరికొన్ని హెచ్చరికలు చేయుచున్నారు. అవి యేవనగా.

గర్భిణీ స్త్రీలు పొగ త్రాగరాదు. క్రిమిసంహారక మందులను (యాంటీబయాటిక్స్‌ను) వాడరాదు. నోరు, పండ్లు శుభ్రముగా నుంచుకొనవలెను. రక్తపోటు, రక్తహీనత కలుగకుండ జాగ్రత్తపడవలెను. తీవ్ర విరేచనకర

ఔషధములు, సీసము క్వినైన్, ఎర్గాట్ మొద లగు మందులను వాడరాదు. ధనుర్వాతము మొదలగు విపత్తులు జరుగకుండ ముందు జాగ్రత్తచర్యగా టీకాలు వేయించుకొనవలెను.

నేడు పోషకాహార లోపమువలన, వాతా వరణ కాలుష్యమువలన, జీవన పోరాటము లోని అలసటలవలన, మానసిక ఒత్తిడుల వలన గర్భిణీ స్త్రీలకు చాలారకముల బాధలు కలుగుచున్నవి. ముఖ్యముగా ప్రథమ గర్భిణీని ఎక్కువగా బాధించుచున్నవి. అందుచే గర్భిణీ స్త్రీని ఒక వైద్యురాలి పర్యవేక్షణలో నుంచుట ఎంతైనా అవసరము. నెల కొకసారి అయినా ఆ వైద్యురాలిచే పరీక్షచేయించుట అవసరము. రక్తపోటు పెరుగకుండ, ఒంటికి నీరు పట్టకుండ ఉప్పు కారములను మితముగా వాడవలెను. రక్తములో హేమోగ్లోబిన్ సరిగా ఉన్నది లేనిది పరీక్ష చేసుకొని అవసరమైన టానిక్కులను వాడుట మంచిది. రక్తములో సవాయివంటి వ్యాధి కలదేమో తెలిసికొను టకు (VDRL) వీ.డి.ఆర్.ఎల్. పరీక్షకూడా అవసరము. భార్యాభర్తల రక్తములో (RH Factor) ఆర్.హెచ్. అంశము ఉన్నదో లేదో అను విషయము తెలిసికొనుట మంచిది. అవసరమైన ఎడల రక్తము నెక్కించుటకై ఆమె రక్తము ఏ గ్రూపునకు చెందినదో తెలిసికొని ఉండుట మంచిది. (రక్తము A,B,AB,O) ఏ,బీ,ఏబీ,ఓ, అను నాలుగు గ్రూపులుగా నుండును.

మన శరీరములో 107 మర్మ స్థానము లుండుననియు అచట దెబ్బతగిలిన ప్రమాద ము జరుగుననియు ఆయుర్వేద గ్రంథము లందు హెచ్చరికలు గలవు. మర్మస్థాన మనగా మాంసము, సిరలు, స్నాయువుల (ఎముకలు, కీళ్ళు అనువాని యొక్క పరస్పర సంబంధ) సంయోగ స్థానములు. అట్టి స్థానములందు ప్రాణములు స్వభావముగనే విశేషముగా సంచరించుచుండును. అందువలన వాటికి దెబ్బ తగులుటవలన భ్రమము, ప్రలాపము, గర్భపతనము, ప్రమేహము మొదలగు నుపద్రవములు కలుగు అవకాశమున్నది. ఏ మర్మస్థానమునందు దెబ్బతగిలిన ఎటువంటి విపత్తి సంభవించునో సుశ్రుతమునందు చాలా వివరముగా వర్ణింపబడినది. వాటిని వైద్యులు తెలిసికొనుట మంచిది. ఇంతేగాక గర్భిణీ శారీరక ప్రభావము శిశువుపై ఎంతగా పడునో సుశ్రుతము శరీరస్థానము 3-17 ఈ విధముగా వివరించును.

దోషాభిఘాతైర్గర్భిణ్యా యో యో భాగః ప్రపీడ్యతే ।
స స భాగశ్శిశో స్తస్యా గర్భస్థస్య ప్రపీడ్యతే ॥

అనారోగ్యమువలన గాని ప్రమాదము వలన గాని గర్భిణికి ఏఏ అవయవములందు వేధన కలుగునో అట్టి వేదన గర్భమునం దుండు శిశువునకు అయా అవయవము లందు కలిగి అవి బలహీనపడును.

గర్భములో పెరుగు శిశువు ఆరోగ్యముగా వృద్ధి జెందుటకు ఏఏ ఔషధములు అవసరము

ఆధునిక విజ్ఞానము ప్రకారము గర్భము లో పెరుగు శిశువు వృద్ధిచెందుటకు ప్రత్యేక ఔషధములు ఏమియు లేవు. బలకరమైన ఆహారముతో బాటు కాల్షియం, ఐరన్ మరియు విటమిన్‌లు గల టానిక్కులు తీసు కున్న సరిపోవును. కాని ప్రాచీన గృహ్య సూత్ర ములలో, ఆయుర్వేద గ్రంథములలో శిశువు యొక్క ధాతువృద్ధికి ఆహారముతోబాటు కొన్ని ఔషధములు కూడా చెప్పబడినవి. మహర్షి దయానందుడు తన "సంస్కారవిధి" యందు అశ్వలాయన గృహ్యసూత్రములలోని దిగువ రెండు సూత్రములను వివరించుచు :-

1) **"అథాస్యై మండలాగార ఛాయాయాం దక్షిణస్యాం నాసికాయా మజీతామోషధీం నస్త కరోతి"**

2) **ప్రజావజ్జీవపుత్రాభ్యాం హైకే ॥**

గర్భస్థితి కలిగిన రెండవ లేక మూడవ మాసమందు మఱ్ఱిఊడలను గాని, లేత ఆకుల ను గాని తీసుకొని వాటి రసమును కుడి ముక్కుపుటముతో లోపలకు పీల్చింపజేయ వలెను. మరియు పుష్టికరములైన తిప్పసత్తు, బ్రాహ్మీ కలిసిన ఔషధములను తినిపించవలె ననెను.

అథర్వ వేదములోని మరికొన్ని ప్రమాణ ములు ఇచ్చుచు మహర్షి దయానందుడు "సంస్కారవిధి" యందు భార్యాభర్తలు ముందు గనే ఆరోగ్యవంతులై బలవంతులు పుష్టివంతు లు కావలెనని ఉపదేశించెను. అవి ఏవనగా :

1) ఓం శమీమశ్వత్థ అరూఢస్తత్ర పుంసవనం కృతమ్
తద్వై పుత్రస్య వేదనం తత్ స్త్రీష్వాభరామసి ॥
2)ఓం పుంసి వై రేతో భవతి తత్ స్త్రియామను షిచ్యతే ।
తద్వై పుత్రస్యవేదనం తత్ ప్రజాపతి రబ్రవీత్ ॥
3)ఓం ప్రజాపతిరనుమతిః సినీవాల్యచీక పత్ ।
స్త్రైమాయమన్యత్ర దధత్ పుమాంస మదధదిహ ॥

(అథర్వవేదము 6-11-1,2,3

పై మంత్రములలో గర్భస్థ శిశువు పుష్టి కొరకు ముందుగా భార్యభర్తలు ఆరోగ్యవం తులు పుష్టివంతులునై గర్భధారణ జరుపవలన నియు అట్టివారి సంతానమే బలపుష్టులను బొందు ననియు ఉపదేశించబడినది. భార్యా భర్తలు ముందు మంచి బుద్ధిని, పుష్కలమైన అన్నధనములను, ప్రజోపకార సమర్థతను బొంది, సంతానవంతులు కావలయుననియు ఉపదేశింపబడినది.

మఱ్ఱిచెట్టు సుశ్రుత సంహితలో "న్యగ్రోధ" అను పేరుతో చెప్పబడెను. ఇది వ్రణములను మాన్పుటకు, విరిగిన ఎముకలు అతుకు కొనుటకు, రక్తపిత్తములను పోగొట్టుటకు, స్త్రీల యోని దోషములను దూరము చేయుట కు ఉపయోగపడు నని చెప్పబడినది. తిప్ప తీగ, జ్వర నాశకము, పిత్త, కఫములను, దురదను, అరుచి, వమన, తృషాదాహ ములను పోగొట్టును, మలబద్ధకమును దూరముచేయును. గర్భావస్థలో కలుగు అన్ని ఉపద్రవములకు ఇది ప్రముఖమైన ఔషధ ముగా వర్ణించబడినది.

ఆయుర్వేద గ్రంథములలో కొన్ని సిద్ధౌష ధములు కూడా కనబడుచున్నవి.

సూ : "లబ్ధగర్భాయాశ్చ ఏతేమ అహఃసు లక్ష్మణావట శుంగ సహదేవా విశ్వదేవా నామన్యతమామ్ క్షీరేణ అభిమత్య త్రీంశ్చ తురో వా బిందూన్ దద్యాత్ దక్షిణే నాసాపుటే పుత్రకామాయై న చ తాన్ నిష్ఠీవేత్ ॥

(సుశ్రుత శరీర స్థానం 2-32)

స్త్రీ గర్భము ధరించి యుండగా లక్ష్మణ పంజి, మఱ్ఱిచిగ్గు, సహదేవి, జిబిలిక అను వానిలో దేనినేని ఆవుపాలతో నూరి మూడు లేక నాలుగు చుక్కలు స్త్రీయొక్క కుడిముక్కు నందు నశ్యము చేయించవలెను. అవి గొందు కలోనికి వచ్చి వికారము కలిగించినను ఉమ్మివేయరాదు. లోపలికి మ్రింగవలెను. ఈ శ్లోకము నకే 'వామే దుహితృ కామాయై' అని

అధిక పాఠముకూడా కొన్ని గ్రంథములందు కలదు. అనగా స్త్రీ సంతానము గోరు స్త్రీకి పై ఔషధమును ఎడమ నాసికా పుటములో వేయవలెనని యర్థము.

శ్వేత కటేరి యొక్క మూలమును రసము తీసి ముక్కులో పోయవలెననియు, కమలపత్ర ములు, నీలకమల పత్రములు, మఱ్ఱి చిగుళ్ళ ను మెత్తగానూరి నశ్యము చేయవలెననియు, శాలిధాన్యమును పిండి విసిరి ఉడుకబెట్టుచు దాని నుండి వచ్చు ఆవిరిని గర్భిణీ స్త్రీచే పీల్పించవలె ననియు, ఆ గంజిని వంచి చల్లారిన పిదప ముక్కులో పోయవలె నను నిటువంటి ప్రయోగములు అచ్చటచ్చట కనబడుచున్నవి.

పై ఔషధ ప్రయోగము లన్నియు పురుష సంతానము కలుగుట కొరకు చేయు ప్రయత్న ములని కొందరి అభిప్రాయము. ఆధునిక వైద్యులు కూడా మగపిల్లలు కలుగుటకు సోడియం, పొటాషియం గల చిక్కుళ్ళు, బంగా ళాదుంపలు, అరటిపండ్లు గర్భిణీ స్త్రీచేత ఎక్కువగా తినిపించవలె నని చెప్పుచున్నారు. ఆడపిల్లలు కలుగుటకు కాల్షియం, మెగ్నీషి యం గల పాలు, వెన్న, నెయ్యి మొదలగునవి తినిపించవలెనని కొందరి అభిప్రాయము. ఈ ఆహారములు గర్భము ధరించిన పిదప గాక గర్భము ధరించక ముందు స్త్రీ పురుష లిరువు రిచేత తినిపించి వారి క్రోమోజోములలో మార్పులు కలుగుచున్నవేమో పరిశోధించ వలసి యున్నది.

ఇంతవరకు అందిన విజ్ఞానము ప్రకార ము గర్భస్థితి అయిన తదుపరి ఔషధములవల నగాని, ఆహారము వలనగాని మనము కోరిన మగ, ఆడ సంతానము కలుగుట సాధ్యము కాదు. ఆ ప్రయత్నములన్నియు ముందుగనే చేయవలెనని మా అభిప్రాయము. పుంసవన సంస్కారముయొక్క ముఖ్యోద్దేశ్య ము, అది గర్భములో పెరుగు శిశువుల పుష్టికొరకే గాని పుత్రుల కొరకు కాదు. ఇంతేగాక గర్భములో ప్రవేశించిన జీవుని గుణస్వభావములను బట్టి ఆడ, మగ లేదా నపుంసక సంతానము కలుగును. చరక సంహిత ఈ విషయమును మరింత స్పష్టపరచును.

''తద్యథా–క్లైబ్యం భీరుత్వమ వైశారద్యమనవస్థానమథో గురుత్వ మసంహననం శైథిల్యం మార్దవం తథాయుక్తాని చాపరాణి స్త్రీ కరాణి, అతో విపరీతాని పురుష కరాణి, ఉభయ భాగావయవా నపుంసక కరాణి ॥ (చరక. శరీర. 3–15)

భావము : స్త్రీ పురుష సంబంధమగు విశేష భావములు ఆత్మ వలనను, పంచ భూతముల వలనను కలుగును. అట్లు కలుగు భావము లలో ఏ భావము లధికముగా నుండునో వాని ననుసరించి స్త్రీ గాని, పురుషుడు గాని, నపుంసకుడు గాని జన్మించును. ఎట్లనగా ధీరత్వము లేకపోవుట, భీరుత్వము, మోహ ము, స్తిమితము లేకుండుట, అధో భాగము నందు గురుత్వము, దృఢత్వము లేకుండుట, శిథిలత్వము, మృదుత్వము మొదలగు భావము లవలన స్త్రీ జనించును. వీటికి వ్యతిరేకము లైన భావముల వలన పురుషుడు జనించును. స్త్రీ, పురుష భావముల రెండింటి కలయిక వలన నపుంసకుడు జనించును.

అయితే గర్భస్థాపన జరిగిన పిమ్మట కూడా మగ సంతానము కొఱకు ఎన్నెన్నో ప్రయత్నములు, ప్రయోగములు జరిగినట్లు మన వివిధ ప్రాచీన ఆయుర్వేద గ్రంథము లలో కనబడును. వారి అనుభవములో అవి ఫలించినట్లు కూడా చెప్పబడినది. చరక సంహిత ఈ విషయమును వివరించుచు యిట్లు చెప్పును.

తయోః కర్మణా వేదోక్తేన వివర్తన ముపదిశ్యతే ప్రాగ్వ్యక్తీభావాత్ ప్రయుక్తేన సమ్యక్, కర్మణాం హి దేశకాల సంపదు పేతానాం నియతమిష్టఫలత్వం, తథేతరేషా మితరత్వమ్। తస్మాదాపన్న గర్భాం స్త్రియమభిసమీక్ష్య ప్రాగ్వ్యక్తీ భావాద్గర్భస్య పుంసవన మస్యై దద్యాత్– గోష్ఠే జాతస్య న్యగ్రోధస్య ప్రాగుత్తరా భ్యాం శాఖాభ్యాం శుఙ్గేఽనుపహతే అనాదా ద్వాభ్యాం ధాన్యమాషాభ్యాం సంపదుపేతా భ్యాం గౌరసర్షపాభ్యాం వా సహ దధ్ని ప్రక్షిప్య పుష్యే పిబేత్, తథైవాపరా జ్జీవ కర్షభ కాపా మార్గ సహచర కల్కాంశ్చ యుగపదేద్వైకశో యథేష్టం వా–ప్యుప సంస్కృత్య పయసా కుడ్యకీటకం మత్స్యః కోద్రం చోదకాఞ్జలౌ ప్రక్షిప్య పుష్యేణ పిబేత్, తథా కనకమయాన్ రాజతానాయసాంశ్చ పురుషకానశ్నివర్ణానణు ప్రమాణాన్ దధి పయస్యుదకాఞ్జలౌ వా ప్రక్షి ప్యపిబేదనవశేతః పుష్యేణ, పుష్యేణైవచ పిష్టస్య పచ్యమానస్యోష్మాణ ముపాఘ్రాయత్ స్యైవ చ పిష్టస్యోదక సంసృష్టస్య రసం దేహళీ మునని ధాయ దక్షిణే నాసాపుటె స్వయమాసి ఞ్చేతిచునా, ఇతి పుంసవనాని, యచ్చాన్యదపి బ్రాహ్మణా బ్రూయు రాప్తా నా పుంసవన మిష్టం తచ్చానుష్ఠేయమ్ ॥

(చరక శారీర 8–18,19)

గర్భమునకు లింగ భేదము వ్యక్తమగుటకు పూర్వమే ఆయుర్వేదము నందుచెప్పబడిన కర్మను చక్కహా ప్రయోగించినచో కోరిన విధ ముగా స్త్రీగాగాని, పురుషుడుగాగాని మార్పు చెందించు అవకాశమున్నది. అవి దేశ కాల ముల కనుకూలమైనచో కోరిన ఫలితములు కలుగును. వ్యతిరేకములైనచో ఫలితములు కలుగవు. అందుచే లింగభేదము వ్యక్తమగు టకు పూర్వమే (6 వారముల లోపే) గర్భిణీ స్త్రీకి ఈ పుంసవనము పుత్రులకొఱకు చేయింపవలెను. ఎటులనగా గోవులను కట్టి వేసెడి స్థలములో మఱ్ఱిచెట్టు యొక్క తూర్పు కొమ్మకుగాని, ఉత్తరపు కొమ్మకు గాని యున్నట్టి రెండు మంచి చిగుళ్ళను తెచ్చి రెండు మినుప గింజలతో గాని, రెండు తెల్ల ఆవగింజలతో గాని కలిపి పెరుగునందుంచి పుష్యమి నక్షత్రముతో కూడినట్టి దినము నందు గర్భిణీ స్త్రీ పానము చేయవలెను.

2) జీవకము, ఋషభకము, ఉత్తరేణి, ములుగోరింట వీని అన్నిటి యొక్క గాని, ఒక్కొక్కదాని యొక్క గాని లేదా కొన్నిటి యొక్కగాని కల్కములను గ్రహించి పాలతో కలిపి పానము చేయించవలెను.

3) కీటకముచే గోడపై నిర్మింపబడిన గూడును గాని, మత్స్య కోద్రముగాని దోసిలి పరిమాణముగల ఉదకము నందుంచి పుష్యమి నక్షత్రముతో కూడిన దినము నందుగాని త్రాగించవలెను.

4) బంగారముతోగాని, వెండితోగాని, ఇనుముతోగాని, అగ్నివర్ణము కలిగిన (బహుశః కాలిన) పురుష విగ్రహములను దోసిలి పరిమాణముగల పెరుగునందు గాని ఉదకమునందుగాని ముంచి దానిని పుష్యమి నక్షత్రమునందు పూర్తిగా పానము చేయించ వలెను.

5) మరొరక ప్రయోగ మేమన పై ప్రయోగములలో చెప్పబడినట్టి మూలికలను

ముద్దగానూరి పుష్యమి నక్షత్ర దినమునందు ఆ ముద్దను ఉడకబెట్టుచు దానియొక్క ఆవిరిని గర్భిణిచే అఘ్రాణింపజేయవలెను. లేదా వాటి రసమును తీసి వడగట్టి ఆ రసములో దూది పింజను ముంచి గర్భిణీ స్త్రీ స్వయముగా తన కుడి నాసికా రంధ్రములో పిండుకొన వలెను. అది లోపలకు యింకుటకొఅకు తలను గడపపై వెనుకకు వాలునట్లు పెట్టి ఈ క్రియ చేయవలెను. ఇట్టి పుంసవన విధులు మరి కొన్ని కూడ గలవు. వైద్యులు, విద్వాంసులు, ఆప్తులు చెప్పినట్టి ప్రయోగ ములు కూడా అనుకూలముగా నున్నచో ఆచరింపవచ్చును.

వద్లూరు (కామారెడ్డి) ఆర్షగురుకుల ఆచార్యులు పం. వేదవ్రత్ మీమాంసక్ గారు పురుష సంతానము కొఅకు శివలింగ బీజములను మగలేగ కలిగిన ఆవుపాలతో సేవించు ఒక విధానముస్త్ర చెప్పుదురు. దానివల్ల ఇందూరు మండలములో పెక్కురకు ఫలితములు కలిగినవి. ఈ ఫలితములన్నియు కాకతాళీయములా ? లేక మూలికల ప్రభావమా ? పరిశోధించవలసి యున్నది. ముఖ్యముగా ఈ ప్రయోగము లన్నియు "ప్రాగ్వ్యక్తభావాత్' గర్భస్థ శిశువునకు లింగబేధము ఏర్పడక పూర్వమే చేయవలె ననుట మరువ రాదు. గర్భస్థాపన జరిగినది మొదలు రెండు నెలలవరకు ఈ అవ్యక్తావస్థ ఉండునని మన ఆయుర్వేద గ్రంథములలో గలదు. కాని, ఆధునిక గర్భవిజ్ఞానము (Embriology) ఈ స్థితి ఆరు వారముల వరకు మాత్రమే ఉండునని చెప్పును.

This stage (which belongs to the middle of second month) of formation is often termed indifferent stage, but it is quite possible to distinguish the sex even now Nevertheless, and even earlier, the fundamental arrangements of these simple parts is the same for both sexes at this time, and in this way may be said to be indifferent.

- Manual of embriology by J.E. Trager

కాన, గర్భస్థాపన జరిగినట్లుతెలిసిన వెంటనే ఈ ప్రయోగములు చేసిన ఫలించ వచ్చును. పరమేశ్వరుని ఈ అద్భుత సృష్టిలో మూలికల ప్రభావము కూడా అద్భుతమే. ఆధునిక విజ్ఞానమున కందనిదే.

బిడ్డ ధాతుశక్తి పెరుగుటకు తీసికోవలసిన ఆహారము :

ఆధునిక వైద్య విజ్ఞానము గర్భిణీ స్త్రీ యొక్క జీర్ణశక్తి ననుసరించి పుష్టికరమైన ఆహారములను, టానిక్కులను సూచించును. రోగనిరోధక శక్తి పెరుగుటకు బిడ్డ పుట్టిన తదుపరి కొన్ని రకముల టీకాలను ఇవ్వవలసి యుండు నని చెప్పును. ఇంతకు మించి ప్రత్యేక మూలికలను గాని ఆహారములను గాని సూచించదు. కాని, మన ఆయుర్వేద గ్రంథములలో గర్భిణీ స్త్రీ ఆహారమును గూర్చిన విస్తృత వర్ణనలు కనబడును. అందు కొన్నిటిని ఇచ్చట ఉదహరించు చున్నాము.

"విశేషతస్తు గర్భిణీ ప్రథమద్వితీయ తృతీయ మాసేషు మధురశీతద్రవ ప్రాయమా హారము పసేవేత. విశేషతస్తు తృతీయే షష్టికౌదనం పయసా భోజయేచ్చతుర్థే దద్నా, పఞ్చమే పయసా, షష్ఠే సర్పి షేచేత్య కే. చతుర్థే పయోనవనీత సంసృష్టమాహార యేజ్జాఙ్గల మాంస సహితం హృద్యమన్నం భోజయేత్. పఞ్చమే క్షీరసర్పిః సంసృష్టం షష్ఠే స్వదంష్ట్రా సిద్ధస్య సర్పిషో మాత్రాం పాయయే ద్యవాగూం వా సప్తమే సర్పిః పృథక్పర్ణ్యాది సిద్ధమేవమా ప్యాతే గర్భః । అష్టమే బదరోదకేన బలాతిబలా శతపుష్పాపలల పయోదధి సిద్ధమేవమా ప్యాయతే గర్భః । అష్టమే బదరోద కేన బలాతిబ లాశతపుష్పావలల పయోదధి మస్తు తైలలవణ మదనఫలమధు ఘృత మిశ్రేణాస్థాపయేత్పు రాణ పురీషశుద్ధ్యర్థమనులో మనార్థం చ వాయోః తతః పయోమధుర కషాయ సిద్ధేన తైలేనానువాసయేదనులోమే హి వాయౌ సుఖం ప్రసూయతే నిరుపద్రవా చ భవతి, అత ఊర్ధ్వమ్ స్నిగ్ధాభి ర్యవాగూ భిర్జాఙ్గల రసై శ్చోపక్రమేదా ప్రసవకాలా దేవముపక్రాన్తా స్నిగ్ధా బలవతీ సుఖమను పద్రవా ప్రసూయతే ॥ (సుశ్రుత శరీర. 10-4)

గర్భిణీ స్త్రీ మొదటి, రెండవ, మూడవ నెలల యందు మిక్కిలి మధురముగా, శీతలముగా, ద్రవముగా నుండు ఆహారమును సేవించవలెను. ముఖ్యముగా మూడవ మాసమునందు ఆరువది దినములకు ఫలించు వరి అన్నమును పాలతోడను, నాలుగవ మాసమందు పెరుగు తోడను, అయిదవ మాసమందు పాలతోడను, ఆరవ మాసమందు నేయితోడను భుజింప వలయు నని కొందరు వైద్యాచార్యులు అభిప్రాయము. నాలుగవ మాసము నందు పాలు, వెన్న వీనితో మిశ్రమమైనట్టియు జాంగల మాంస యుక్తమగు నట్టిదియు ప్రియమై నట్టిదియు నైన అన్నమును భుజింపవలెను. అయిదవ మాసము నందు పాలు, నెయ్యి వీనితో గూడిన అన్నమును భుజించవలెను. ఆరవమాసము నందు పల్లేరు కషాయముతో సిద్ధము చేయబడిన ఘృతమును గాని, జావను గాని పానము చేయించవలెను. ఏడవ మాసము నందు నేలగుమ్ముడు, ఆముదపు వేరు, గలిజేరు మొదలగు పృథక్పర్ణ్యాదుల వ్రేళ్ళ కషాయముతో సిద్ధము చేయబడిన ఘృతమును త్రాగించవలెను. దీనివలన గర్భము వృద్ధి చెందును. ఎనిమిదవ మాసము నందు గర్భిణికి నిలువ ఉన్న ప్రాత మలశుద్ధి కొరకును, వాతము అనులోమముగా సంచరించుటకును రేగుపండ్ల కషాయము నందు చిన్న పెద్ద ముత్తువ పులగము, పెద్ద సదాప మాంసము (పాలతో జేసిన ఒక పదార్థ విశేషము), పాలు పెరుగు, మీగడ, నూనె, సైందవలవణము, మ్రంగకాయులు, తేనె, నెయ్యి వీనిని కలిపి నిరూహవస్తి (ఎనిమా) జేయవలయును. పిమ్మట పాలు, మధుర ద్రవ్యములు వీని కషాయముతో సిద్ధము జేసిన తైలముచే అనువాసన వస్తిని జేయవలెను. ఈ ఉపచారముల వలన వాతము అను లోమ గమనము గలదై ఉపద్రవములు లేక గర్భిణి సుఖముగా ప్రసవించును. ఎనిమిదవ మాసము గడచిన పిదప స్నిగ్ధమైన జావ, జాంగల మాంసరసము వీనితో ప్రసవకాలము వరకు నుపచరించిన ఎడల గర్భిణీ స్నిగ్ధతను బలమును కలిగినదై ఉపద్రవములేక సుఖముగా ప్రసవించును. ఇచట జాంగల మాంసరసమును సేవించ వలయునను మాటలు కనపడుచున్నవి. ఇదే గ్రంథమున మరొకచోట **'న మాంసమ శ్నీయాత్' - గర్భిణి మాంసమును సేవించ రాదు.** అను నిషేధము స్పష్టముగా గనబడు చున్నది. అందువలన ఇచట మాంస పదము నకు గల అనేక అర్థములలో ప్రకరణమును బట్టి పండ్లగుజ్జు అని గాని లేక పాలతో చేసిన ఒక విశేష పదార్థము అని గాని అర్థము చెప్పుకొన వలెను.

...మిగితాది తరువాయి సంచికలో

వైదిక ధర్మోపదేశములు

గాయత్రి రామాయణము

-చలవాది సోమయ్య

(గత సంచిక తరువాయి.....)

వేదంలో 23 అక్షరాలతో ఉన్న నిచృద్ గాయత్రీ ఉన్నప్పటికి కొందరు ఈ మంత్రం లోని మూడు అక్షరాలు గల "వరేణ్యం" పదాన్ని నాలుగు అక్షరాలు గల "వరేణియం" పదంగా చెబుతూ గాయత్రి 24 అక్షరాలు కలిగిన మంత్రం అంటారు. వాల్మీకి రామాయణం 24 వేల శ్లోకాలు కలదని ప్రతి వెయ్యి శ్లోకాలకు మొదటి శ్లోకం వరుసగా గాయత్రీ మంత్రంలోని ఒక్కొక్క అక్షరం గల పదంతో ఆరంభమవుతుందని, కనుక వాల్మీకి రామాయణానికి మూలాధారం గాయత్రీ మంత్రమేనని కొందరు చెబుతారు. రామాయణంలోని మొదటి శ్లోకం గాయత్రీ మంత్రం లోని మొదటి అక్షరం "త"తో మొదలవుతుంది. "ఉప స్వాధ్యాయ నిరతం ...." అని, గాయత్రిలోని చివరి అక్షరం "యాత్" రామాయణంలోని చివరి వెయ్యి శ్లోకాలను మొదటి శ్లోకం "యా" మేవ రాత్రిం శత్రుఘ్నః ...." అని "యా"తో మొదలవుతుంది.

అయితే ''రామాయణ విశేషాలు'' శ్రీసురవరం ప్రతాపరెడ్డి గారు, "గాయత్రి-రామాయణం" వ్రాసిన పండిత శ్రీరామశర్మ ఆచార్యగారు కూడ రామాయణంలోని ప్రతి వెయ్యి శ్లోకాలను లెక్కబెట్టి అందులోని మొదటి శ్లోకానికున్న మొదటి అక్షరాన్ని గాయత్రీ మంత్రంలోని అక్షరాలకు పోల్చి చూడగా కొన్ని చోట్ల అవి సరిపోవడం లేదని అన్నారు. ఇలా జరగడానికి కారణం కాలగతిలో కొందరు రామాయణంలోని కొన్ని శ్లోకాలు తీసివేయడం లేదా కొన్ని కలపడం వల్లనేనని కూడ వారు వ్రాశారు. మొత్తం మీద రామాయణానికి గాయత్రీ మంత్రానికి అవినాభావ సంబంధం ఉన్నదని మన పూర్వులు చెబుతూ వచ్చారు.

స్త్రీలు, శూద్రులు కూడ గాయత్రిని జపించ వచ్చును :

ఇటువంటి మహిమాన్వితము, భగవద్దత్తము, వేదమంత్రము నయిన గాయిత్రి మంత్రాన్ని స్త్రీలకు శూద్రులకు ఉపదేశింపరాదని, వారా మంత్రాన్ని స్మరింపరాదని చెప్పేవారు కూడ ఉన్నారు. ఇది అజ్ఞానం, పక్షపాతం, స్వార్థ బుద్ధితో చెప్పేమాట తప్ప సత్యంకాదు. స్త్రీ, పురుష, కుల, మత, ప్రాంత, దేశ ప్రసక్తి లేక మానవమాత్రులందరూ ఈ మంత్రాన్ని జపించవచ్చును. భగవంతుడిచ్చిన అన్న జల, వాయు, అగ్ని మున్నగు పదార్థాలను సర్వులు అనుభవిస్తున్నట్లే భగవంతుడిచ్చిన జ్ఞాన భండారమైన వేదము కూడ అందరి ప్రయో జనం, ఉన్నతికొఱకు యివ్వబడిందని భగవంతుడే చెబుతుండగా అజ్ఞానంతోను, పక్షపాతంతోను, కుత్సితము స్వార్థబుద్ధితోను స్త్రీ, శూద్రులకు వేదాధికారంలేదు గాయత్రిని వారు జపించరాదు అని చెప్పివారి మాటలను మనం ఎందుకు గౌరవించాలి ? చూడండి వేదం ఏమి చెప్పిందో

యథేమాం వాచం కల్యాణి మావదాని జనేభ్యః బ్రహ్మ ।
రాజన్యాభ్యాం శూద్రాయ చార్యాయ చ స్వాయ చారణాయ ॥ -యజు. 26-2

ఈ కళ్యాణ కర్తమైన వేద వాక్కులను జనేభ్యః - మానవమాత్రులందరికి ఉపదేశిస్తున్నాను-అజనులెవరో కూడ స్పష్టంగా మంత్రంలో లెక్కించడం జరిగింది. బ్రహ్మ-బ్రాహ్మణులు, రాజన్యః - క్షత్రియులు, శూద్రాయ-శూద్రులు, అర్యాయ-వైశ్యులు స్వాయ-వీరికి సంబంధించిన వేదాన్ని ఉపదేశిస్తున్నాను అలాగే మీరూ అందరికి ఉపదేశించండి అని భగవంతుడే వేదం ద్వారా మనలను ఆదేశించుతున్నప్పుడు కాదనడానికి మనమెవరము ? ఈ మంత్రంలో పేర్కొనబడిన బ్రాహ్మణ, క్షత్రియాది వర్ణస్థులను పుట్టుకను బట్టిగాక వారి వారి గుణకర్మ లను బట్టి నిర్ణయించడం వైదిక సంప్రదాయ మని పాఠకులు గమనించగలరు. "చాతుర్వ ర్ణం మయా సృష్టం గుణకర్మ విభాగశః" - గీత. 4-13 గుణకర్మలనుబట్టి నాలుగు వర్ణాలను విభజిస్తున్నాన్నాడు కృష్ణుడు గీతలో.

కనుక గాయత్ర్యాది వేదమంత్రాలను స్త్రీ, శూద్ర భేదం లేక అందరూ పఠించవచ్చునని మనకు పై వేదమంత్రాధారంగా తెలుస్తుంది. వాల్మీకి రామాయణంలో కౌసల్య అగ్నిహోత్రం చేసిందని, జానకి సంధ్య చేయడానికి నదికి వెళ్ళిందని చెప్పే శ్లోకాలున్నాయి. చూడండి.

సాక్షౌమ వసనా హృష్టా నిత్యం వ్రత పరాయణా ।
అగ్నిం జుహోతి స్మతదామన్త్రవత్కృ మంగళా ॥

-వా.రా.అయో.కాం. సర్గ 20-శ్లో॥ 15.

శ్రీరాముడు వనవాసానికి బయలుదేరే ముందు తల్లియైన కౌసల్యతో చెప్పి వెళదామని ఆమె ఉండే అంతఃపురానికి వెళతాడు. అపుడు 'నిత్యం వ్రతపరాయణి అయిన కౌసల్య పట్టు వస్త్రాలను ధరించి ప్రసన్న చిత్తంతో వేద మంత్రాల నుచ్చరించుతూ అగ్నిహోత్రం చేస్తూ ఉన్నది.

సంధ్యాకాల మనాః శ్యామా ధ్రువమేష్యతి జానకి।
నదీం చేమాం శివజలాం సంధ్యార్థేవరవర్ణినీ ॥ -వా.రా.సుం.కాం. సర్గ 74-50 శ్లో॥

ఆంజనేయుడు లంకా నగరంలో సీతను వెదకుచు సాయం సంధ్యా సమయమవడం గమనించి తనలో 'సంధ్యా సమయమయింది గనుక ఈ పవిత్ర నదీజలాల్లో స్నానమాడి సంధ్యచేసికోడానికి సుందరవర్ణ అయిన జానకి తప్పకుండ యిక్కడికి రాగలదు అని అనుకుంటాడు.

పై ఆధారాలను బట్టి స్త్రీలు వేదమంత్రాల నుచ్చరిస్తూ యజ్ఞం చెయ్యడానికి గాయత్ర్యాది మంత్రాలను స్మరిస్తూ సంధ్య చెయ్యడానికి అర్హులేనని మనకు విదితమౌతుంది.

ఇక శూద్రుల విషయంలో ఋగ్వేదం ప్రథమ మండలంలోని 116వ సూక్తానికి ఋషి కక్షీవంతుడు, ఇతడు అంగరాజ మహిషి (పట్టపురాణి) యొక్క దాసీపుత్రుడు, అతి శూద్రుడు, ఇలాగే నవమ మండలం 76వ సూక్తానికి కూడ అతడే ఋషి. ఆ కక్షీవంతుని పుత్రుడు శబరుడు దశమ మండలం 169వ సూక్తానికి ఋషి. కక్షివంతుని పుత్రిక ఘోష దశమ మండలం

లోని అనేక సూక్తాలకు ఋషిక, ఈమెకాక అదితి, గోదా, నదీ, యమీ, శశ్వతీ, సరమా, ఊర్వశీ, ఆత్రేయీ మొ॥ విదుషీమణులు మంత్ర ద్రష్టలు-మంత్రాలను గ్రహించిన వారుగా వేదాలల్లో కనబడుతున్నారు. ఇతరా పుత్రుడు ఐతరేయుడు దాసీ జన్ముడు. ఇతడు ఐతరేయ బ్రాహ్మణగ్రంథాన్ని రచించాడు. ఇలా ఎందరో శూద్రులు, అతిశూద్రులు అయిన స్త్రీ పురుషులు వేదాల నెరిగి వేదాలను ప్రచారం చేసిన వారున్నారు. కనుక స్త్రీ శూద్రులు వేదం చదువవచ్చునా ? లేదా ? వారు యజ్ఞోపవీతం ధరించవచ్చునా ? లేదా? గాయత్రీ మంత్రాన్ని స్మరించవచ్చునా ? లేదా ? అని సందేహించవలసిన పనిలేదు. 19వ శతాబ్దంలో యుగపురుషుడుగ జన్మించిన మహర్షి దయానంద సరస్వతి పుణ్యమా అని మరుగునబడిన వేదాలు మరల వెలుగు లోనికి వచ్చాయి. ఇపుడు స్త్రీ, శూద్ర భేదం లేక మానవ మాత్రులెల్లరు వాటిని చదివి మననం చేసికొని తమతమ జీవితాలను భస్మం చేసికొనే అవకాశం కలిగిందని పాఠకులు గ్రహింతురుగాక !

గాయత్రికి ఆకారము లేదు :

మరొక విషయం. కొందరీ నాడు గాయత్రికి ఒక స్త్రీ మూర్తి ఆకారం కల్పించి ఆమె గాయత్రీదేవి అని చెబుతూ ఆమెను గాయత్రీ మంత్రంతో ఉపాసించాలని చెప్పడం జరుగుతున్నది. ఇది కూడ వేదవిరుద్ధమైనదే. వేదంలో ఎక్కడా భగవంతునికి ఆకారం ఉన్నదని గాని, స్త్రీ పురుష ఆకృతులను కల్పించి భగవంతునికి మారుగా ఆయామూర్తులను ఉపాసించమని గాని చెప్పబడలేదు. మూర్తి పూజలు, ప్రాకృతిక జడ పదార్థాలను ఉపాసించడం మొ॥ ఆచారాలు మహాభారత యుద్ధానంతరం వేదాలు వేదసిద్ధాంతాలు ప్రచారంలో లేక మరుగున బడిన మధ్యకాలములో జనుల్లో వ్యాపించాయి. మనపూర్వ మహర్షులెవ్వరూ భగవంతునికి ఆకారాలు కల్పించి ఆయా మూరులను ఉపాసించినట్లుగా మన చారిత్రక గ్రంథాలైన రామాయణాది ప్రాచీన గ్రంథాల్లో ఎక్కడాచూడము. బౌద్ధ జైనమత ప్రభావాల వల్ల మూర్తి పూజలు వ్యక్తి ఆరాధనలు వైదికులలో వ్యాపించినాయని అవి మొదట లేవని అవి అవైదికమని మహర్షి దయానందులు నిర్ ద్వంద్వంగా ప్రకటించి యున్నారు. కనుక గాయత్రికి ఒక స్త్రీ మూర్తి ఆకారం కల్పించడం, షోడశోపచారాలు చేయడం వంటివి ఆ వైదికమని పాఠకులు గుర్తింతురుగాక ! ప్రపంచ సృష్టి స్థితిలయ కారకుడు, సర్వ వ్యాపకుడు సర్వశక్తివంతుడు అయిన పరమేశ్వరోపాసనకు సంబంధిం చిందే గాయత్రీమంత్రంగాని మూర్తి పూజకు సంబంధించింది కాదని పాఠకులు గుర్తించగలరు.

గాయత్రి సూర్యోపాసనకు సంబంధించిన మంత్రం కాదు

గాయత్రీ మంత్రంలోని సవితా శబ్దానికి వేద నిఘం టువు సాధారణ నిఘంటువుల్లో చాలా అర్థాలివ్వబడినాయి, ఆ అర్థాలు యివి-జగదీశ్వరుడు, సూర్యుడు, తండ్రి, ఐశ్వర్యం కలవాడు, ఉపదేశకుడు, విద్వజ్జినుడు, రాజు, శిల్పి, అర్కవృక్షము, ఇంద్రుడు, శివుడు మొ॥వి, కాని గాయత్రీ మంత్రము లోని సవితా పదానికి జగత్కర్తయైన పరమేశ్వరుడనే అర్థం తీసుకోవాలిగాని సూర్యుడని అర్థం తీసికొని సూర్యుని ఉపాసించడంగాని, గాయత్రిని స్మరిస్తూ సూర్యునికెదురుగా అర్ఘ్యం వదలడంగాని సరికాదు. మనంచూచే సూర్యుడు జగత్కర్త అయిన పరమేశ్వరుడు సృష్టించిన కోటానుకోట్ల సూర్యుల్లో ఒకడు. (మనం ఆకాశంలో చూచే నక్షత్రాలన్నీ సూర్యుళ్ళే) అంతేగాని అతడు సృష్టికర్తకాడు. ఈ సూర్యుడొక జడపదార్థం. దానికి జ్ఞానం లేదు. అది జ్ఞానప్రదాత కాదు. సూర్యుడు భగవంతుని నియమాన్ని నను సరించి మండుతూ తిరుగుతున్న ఒక అగ్ని గోళం. అందుకనే కఠోపనిషత్తులో యిలా చెప్పబడింది.

భయాదస్యాగ్ని స్తపతి భయాత్తపతి సూర్యః ।
భయా దింద్రశ్చ వాయుశ్చ మృత్యుర్ధావతె పంచమః ॥ -కఠ. 6-3

ఆ పరమేశ్వరుని భయంవల్లనే అగ్ని దహిస్తున్నది. సూర్యుడు తపించుతున్నాడు. ఆకాశంలో విద్యుత్తు - మెరుపు మెరుస్తున్నది. వాయువు వీస్తున్నది. అయిదవదయిన మృత్యువు ప్రాణులను గ్రసించడానికి - మ్రింగడానికి పరుగెత్తుతున్నది. అని ఉపనిషత్తు వర్ణించింది. కనుక సూర్యాది జడ పదార్థాలు ఈశ్వర నియమానన్నుసరించి వాటి వాటి కార్యాలను చేస్తున్నవిగాని వాటికి స్వాతంత్ర్యంగాని జ్ఞానంగాని లేదు. గాయత్రీ మంత్రంలో బుద్ధిని-జ్ఞానాన్ని ఇవ్వమని భగవంతుని ప్రార్థించడం జరుగుతుంది కనుక జ్ఞాన ప్రదాత అయిన పరమేశ్వరోపాసనకు సంబంధించిందే గాయత్రీ మంత్రం కాని సూర్యోపాసనకు సంబంధించింది కాదని సులభంగానే పాఠకులు గుర్తించగలరు.

గాయత్రీమంత్ర విశిష్టతను గూర్చి మనపూర్వులు, నవీనులు వెలువరించిన అమూల్య అభిప్రాయములు :-

1) గాయత్రీ పఠనము భవబంధములను భేదించగలది (విశ్వామిత్రమహర్షి)

2) గాయత్రీ పఠన పాపులను కూడ పవిత్రులుగా చేయును (వశిష్ఠమహర్షి)

3) గాయత్రీయే తపము, యోగము, సాధనము (మహాదేవశివుడు)

4) గాయత్రీ మంత్రము పాపములను పారద్రోలునట్టిది (యజ్ఞవల్క్య మహర్షి)

5) గాయత్రీ పఠనము బ్రహ్మసాక్షాత్కారము నిచ్చును (భారద్వాజుడు)

6) గాయత్రీ మంత్ర పఠనము బ్రహ్మ ప్రతిరూపమే గాని అన్యముకాదు (వ్యాసముని)

7) గాయత్రి వరము నిచ్చునది. పవిత్ర మనర్చునది (అధర్వవేదం)

8) గాయత్రి వేదముల సారము గాయత్రిని బ్రహ్మయొక్క ముఖద్వారమని గ్రహించవలయును. (మనుస్మృతి)

9) గాయత్రీ మంత్ర పఠనము ముల్లోకము లందును విజయము చేకూర్చును (ఉపనిషత్)

10) శీతలమునకు వేడియు, వర్షమునకు మేఘమును, మెఱుపునకు ఉఱుములును, ప్రాణికి అన్నమును, యజ్ఞమునకు దక్షిణము, వాయువునకు ఆకాశమును, ఎవ్విధముగ అవినాభావ సంబంధము కలిగియున్నవో అటులనే గాయత్రికి-సావిత్రి-పరమేశ్వరునికి సంబంధము కలదని తెలియదగును. (గోవధ బ్రాహ్మణము)

11) ఒక సంవత్సరకాలం ప్రతిదినం ఉసిరిగ రసం త్రాగుతూ గాయత్రి మంత్రము జపించునతడు 116 సం॥లు జీవించగలడు. (చరకుడు)

12) స్తుతి నిపాతమున బ్రాహ్మణ కర్మ విధానమను వర్ణించుచు గౌతమ బుద్ధుడు వేదమునకు ప్రాముఖ్యమొసగి అట్టి వేదాధ్యయనమునందు గాయత్రీ మంత్రమునకు మిగుల విశేష మొసగెను.

13) గాయత్రీ సర్వశేష్ఠ మంత్రము. గురుమంత్రము. దీనిని అందరూ జపించుచు వచ్చిరి. (మహర్షి దయానంద సరస్వతి)
14) గాయత్రీ స్మరణ వలన గొప్పశక్తి కలుగును. (శ్రీరామకృష్ణపరమహంస)
15) హిందువులు విగ్రహారాధకులురారు. ఏలయన వారి ధ్యేయము గాయత్రి, ఈ మంత్రమున 'తత్' క్ష (అ) శబ్దమే ఒక పరోక్ష (invisible) సృష్టికర్త-అనగా సవిత వంకకు సంకేత మొనర్చుచున్నది. అనేకులీ మంత్ర మును సూర్యోపాసనా మంత్రముగ నడుపు చున్నారు. కాని అది సరికాదు. ఏలయన సవితా శబ్దము సృష్టికర్తయైన ఈశ్వరునే బోధించుచున్నది. ఇదియునుగాక ఈ మంత్రమున జ్ఞానము - బుద్ధి నిమిత్తమే ప్రార్థన కలదు. కావున నా జ్ఞాన ప్రదాత జడసూర్యుడెన్నటికిని కాజాలడు. ఇంతేకాదు, ఇందొక గొప్ప విశేషము కలదు. ఏమన : ఈ మంత్రమందు గల 'నః' శబ్దము సమాజ వాచకమై యున్నది. కాన స్త్రీ, పురుషాది మానవమాత్రులందరికి దీనిని జపింప అధికారముగలదు. ఇట్లు మన పూర్వులు విగ్రహారాధకులు కారనియు, నిరాకార ఈశ్వరునే ధ్యానించుచుండిరనియు, ఈ నిరాకారధ్యానమునకు ముఖ్యసాధనము గాయత్రీ మంత్రమనియు స్త్రీ, పురుషులకు గాయత్రీమంత్రము జపించునధికారము కలదనియు స్పష్టమగుచున్నది."

(-శ్రీ స్వామి వివేకానంద)

16) క్రైస్తవ మతమునకు క్రీస్తు దక్క మరెద్దియునులేదు. ముస్లిము మతమునకు హజరత్ మహమ్మదు దక్కమరెద్దియు లేదు. బౌద్ధమతమునకు బుద్ధుడుగాక మరేమియు లేదు. ఈ పురుషులే వారివారి ధ్యేయము. అనగా ఈ పురుషులు దక్కవారికి ధ్యానింప దగిన దేదియు లేదనుట. నేను క్రైస్తవుడనే అయినను సత్యము చెప్పుటలో నాకెట్టి సంశయమును లేదు. హిందువుల యొక్క ధ్యేయము 'గాయత్రి' ఇది లేకుండ ఋషులు గాని, మునులు గాని, మహాపురు షులుగాని జీవింప జాలరు. హిందూమతము ఏ మానవ వ్యక్తి విశేషముపై ఆధారపడి యుండలేదు. ఈ గాయత్రి ద్వారా తిన్నగ పరమేశ్వరుడు నుండియే వారు జ్ఞానమును బడయుగలుగు చున్నారు. (-సర్ మోనియర్ విలియంస్)
17) గాయత్రి కామరుచి నుండి రామరుచి (పరమాత్మ ధ్యానము)లో నిమ గ్నము చేయును (స్వామి రామతీర్థ)
18) వర్తమాన చికిత్సాపద్ధతి సర్వ విధముల ధర్మరహిత మయ్యెను. నిధి ప్రకారము ప్రతిదినము గాయత్రీమంత్ర జపముచేయు వాడు ఎన్నటికిని రోగగ్రస్తుడు కాజాలడు పవిత్రమైన ఆత్మయే పరిశుద్ధమైన శరీరమును నిర్మింపగలుగుచున్నది. ధార్మిక జీవన నియ మము యథార్థముగా శరీరాత్మ లను కాపాడగలదని నానిశ్చితాభి ప్రాయము.

(-మహాత్మాగాంధి)

18) కుమార్గము నుండి సన్మార్గమువైపు నడువవలయుననుకున్నచో గాయత్రీమంత్రో పాసన వేయుము. గాయత్రీ మంత్రజపం వల్ల పాపపంకిలము దూరమగుచున్నది. మను జుడు ఈశ్వరుని సమీపమునకు ఏ విధముగా చేరగలుగుతాడో అతని కాప్రేరణ గాయత్రి వలన లభిస్తుంది.

(-లోకమాన్య బాలగంఘాధర తిలక్)

19) గాయత్రిలో మనుష్యుని ఈశ్వర విశ్వాసి-అస్తికునిగా మార్చునట్టి మహాశక్తి గలదు. గాయత్రీ మంత్రం ఎలా ఆత్మను పరమాత్మతో లీనము చేసి అతని దర్శన భాగ్యము కలిగించుచున్నదో అలాగే ప్రపంచ మందలి సమస్త పదార్థములను యిచ్చు చున్నది. దీనికంటే అధిక శక్తిశాలి అయిన మంత్ర మును నేను చూడలేదు.

(-పండిత మదన మోహన మాలవీయ)

21) ఆత్మ జ్ఞానము, ఆత్మనియంత్రణ, ఆత్మ సమర్పణ మార్గమే యోగము యొక్క మార్గము. గాయత్రీ మంత్రము నందు ముఖ్యముగా ఈ మార్గమే ఉపదేశింపబడినది. ప్రాపంచిక సమస్త దుఃఖములనుండి విముక్తి పొందుటకు వాస్తవిక యోగమార్గము ద్వారా మోక్షప్రాప్తికిని మార్గము గాయత్రియందు వివరింపబడియున్నది. కావున అధ్యాత్మిక సాధకులకు ముక్తి కేవలము గాయత్రీ మంత్రము యొక్క నిరంతర జపముద్వారా కలుగగలదు. (-శ్రీ అరవిందయోగి)
22) ఇహపరలోకములందు గాయత్రి కంటె పవిత్రమైన వస్తు వెద్దియు లేదు. వేదవేదాంగములను చదువుటవలన కలుగు ఫలితమే గాయత్రీమంత్ర జపమువలన లభించుచున్నది. గాయత్రిని ముప్పూటల జపించుటనే శుభము కలుగుచున్నది. ఈ వేదమంత్రము పాపముల నాశమొనర్చి ఉత్తమ ఆరోగ్య, సౌందర్య, వ్రత, వీర్య, బ్రహ్మవర్చస్సుల నొసగెడిదై యున్నది.

(-స్వామి శివానంద సరస్వతి)

23) సూర్యుడు తన కాంతికిరణములచే పగటిని ఎట్లు చేయుచున్నాడో అదే విధముగా సవితాదేవి గాయత్రీ మంత్రమును ధ్యానిఇచు వారి హృదయమున ఆత్మను ప్రకాశింప చేయును. (-స్వామి ప్రభుఆశ్రిత)
24) "ఆయన (స్వామి విరజానంద సరస్వతి) గృహమును వీడి అడవి మార్గమున నడచి ఋషీ కేశమునకు చేరెను. అచట మూడేండ్లు గంగానదిలో నిలబడి బాగుగా గాయత్రీ మంత్ర జపము చేసెను. అంతః కరణరూప చక్షువు వారికి తెలుపబడినది. అనంతరము కూడ రుషీకేశ నిర్జనారణ్యమున తపమొనర్చు చుండ ఒకనాటి రాత్రి ఆయనకు 'నీకు కావలసినది లభించెను. కాన నీవిక ఇచటి నుండి వెళ్ళి పొమ్ము' అని స్వప్నములో వినన య్యెను. అప్పటి కాయన వయస్సు 18 సంవత్సరములు, పిమ్మట హరి ద్వారము వచ్చి అట శ్రీ స్వామి పూర్ణానంద సరస్వతి వలన సంన్యాసము తీసికొనెను". (ఇట్లు గాయత్రీ జపము వలన విరజానందునికి అలౌకిక ఆత్మబలము, విద్య లభించెనని చెప్పబడు చున్నది.) (-శ్రీ పం. చిమ్మన లాల్‌జీ రచించిన "సరస్వతీంద్ర జీవితము")
25) "ఒక సాధారణ బాలకుడు తన పాఠమునెప్పటికప్పుడే మరచి పోవుచుండెను. అందువలన అతని గురువు కుపితుడై పై పాఠములను చెప్పుటమానివైచెను. అంతట అతడు గాయత్రీ జపము చేయనారంభించెను. కొంతకాలమునకు దాని ప్రభావముచే శక్తి శాలియై మహర్షిపాణిని యను నామముతో ప్రసిద్ధుడై అమూల్య వ్యాకరణ మును రచించెను. అది వేదమునకు అద్వి తీయ టీకా తాత్పర్యముల వెలయించుచు 'అష్టాధ్యాయీ' అను పవిత్రనామముతో విఖ్యాతమై యున్నది.

ఇటువంటి మహిమాన్వితము, ఉత్త మోత్తము, వేదమంత్రము అయిన గాయత్రీ మంత్రాన్ని సమస్త మానవులు నిరంతరం స్మరించి జ్ఞాన విజ్ఞానములను పొంది సఫల మనోరథులై ధర్మ, అర్థ, కామ, మోక్షాలను సాధింతురు గాక ! భగవంతుడు అందుకు తగిన శక్తి యుక్తలను మనకు ప్రసాదించు గాక !

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-01-2019 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్ రావు, మంత్రి సభ ·

To,

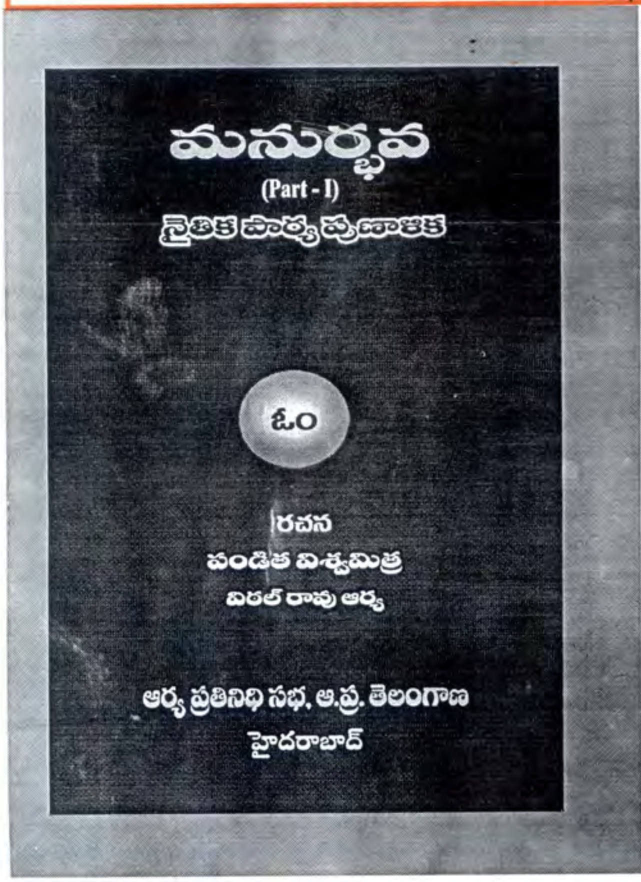

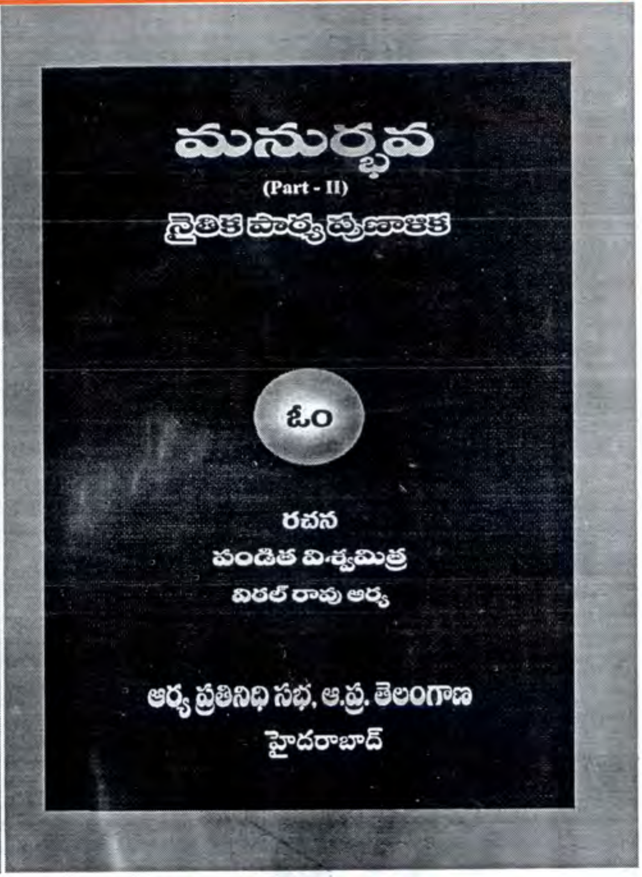

ఆధునిక యాంత్రిక యుగములో విద్యార్థుల నైతిక విలువలను పెంపొందించడానికి పండితుల ద్వారా శిశు నుండి ఏడవ తరగతి వరకు పాఠ్యప్రణాళికను రూపొందించడం జరిగినది. ఈ పాఠ్యప్రణాళిక ద్వారా విద్యార్థుల బౌద్ధిక వికాసాన్ని మరియు వైదిక సంస్కృతి యొక్క ఔన్నత్యాన్ని కోరుకుంటూ ఆచరణాత్మక నిర్మాణం కొరకు

శ్రీ పండిత విశ్వమిత్ర గారు మరియు ప్రొ॥ విఠల్ రావు ఆర్య గారు రచించిన

"మనుర్భవ" పుస్తకములను (1-2 భాగాలను)

ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ద్వారా సప్తమ ముద్రణ చేయించి దీపావళి పర్వదినమున ఆవిష్కరణ సభాధ్యక్షుల ద్వారా చేయబడినవి.

ఈ సందర్భమున ఈ రెండు పుస్తకాలకు *20* శాతం తగ్గింపు మకరసంక్రాంతి వరకు ఇవ్వడం జరుగుతున్నది. కావున జనులు అధిక సంఖ్యలో ఈ సదవకాశాన్ని సద్వినియోగ పరచుకొనగలరు.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विठ्ठलराव मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.